INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

मुख्य परीक्षा हेतु

HANDWRITTEN NOTES

[भाग -1]

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 1

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"RAS (Rajasthan Administrative Service) (मुख्य परीक्षा हेतु)"** *को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "***Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams" मुख्य** *भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें*/

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/9qwi7z

Online order करें - https://bit.ly/4lwfqPD

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

राजस्थान का इतिहास

क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	प्रागैतिहासिक काल की प्रमुख घटनाएँ • ऐतिहासिक स्रोत • प्रागैतिहासिक स्थल (प्राचीन सभ्यताएं) • ऐतिहासिक राजस्थान • महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र • प्राचीन राजस्थान में समाज, धर्म एवं संस्कृति • मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	1-38
2.	महत्त्वपूर्ण राजवंश • गुहिल वंश • प्रतिहार वंश • चौहान वंश • परमार वंश • राठौड़ वंश • सिसोदिया वंश • कछवाहा वंश इत्यादि • प्रमुख घटनाएँ • मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	38-112
3.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था	113-117

	• मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	
4.	राजस्थान में मराठा साम्राज्य • मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	117-133
5.	19 वीं - 20 वीं शताब्दी की प्रमुख घटनाएँ • किसान एवं जनजाति आंदोलन • प्रमुख जन आन्दोलन एवं क्रांतिकारी घटनाएँ • प्रमुख रियासतें और ब्रिटिश संधियाँ • राजस्थान में 1857 की क्रांति • राजनीतिक जागरण • समाचार पत्रों एवं राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका • मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	134-167
6.	राजस्थान में प्रजामण्डल आंदोलन • मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	168-184
7.	राजस्थान का एकीकरण • एकीकरण के समय प्रमुख घटनाएँ एवं उनके कारण • मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	185-194

राजस्थान की कला एवं संस्कृति (धरोहर)

क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	राजस्थान की धरोहर • प्रदर्शन कला एवं ललित कला की विशेषताएं ○ शास्त्रीय संगीत ○ शास्त्रीय नृत्य ○ लोक संगीत एवं वाद्ययंत्र ○ लोक नृत्य एवं नाट्य ○ मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	195-234
2.	राजस्थान की वास्तुशिल्प • प्रमुख मंदिर एवं मंदिर निर्माण की शैलियाँ • महत्त्वपूर्ण किले एवं उनकी विशेषताएं • महत्त्वपूर्ण महल एवं उनकी विशेषताएं • मानव निर्मित जलीय संरचना • राजस्थान में विश्व विरासत के प्रमुख स्थल • मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	235-288
3.	राजस्थानी चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ, उपशैलियाँ और हस्तशिल्प	288-314

	• मेवाड़, उदयपुर, नाथद्वारा, देवगढ़, चावण्ड, मारवाड़, जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, बूंदी, हाड़ौती इत्यादि • मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	
4.	राजस्थान में सामाजिक जीवन • प्रमुख मेले एवं उनकी विशेषताएं • प्रमुख त्यौहार एवं उनकी विशेषताएं • रीति-रिवाज एवं परम्पराएँ • वेशभूषा एवं आभूषण • मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	315-338
5.	राजस्थानी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ एवं राजस्थान की बोलियाँ	339-354
6.	राजस्थान में संत एवं संप्रदाय • राजस्थान के लोक देवी - देवता • मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	355-378
7.	महत्वपूर्ण विभूतियाँ • मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	378-394

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – 1

प्रागैतिहासिक काल की प्रमुख घटनाएँ

परिचय

सामान्यतः इतिहासकार द्वारा अतीत की घटनाओं का गहन अध्ययन करके मानवीय मस्तिष्क को समझना ही इतिहास है।

इतिहास का जनक हेरोडोटस को कहा जाता है वे एक इतिहासकार थे।

> हेरोडोटस (मृत्यु 425 ई. पू.), यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे। उन्होंने अपने इतिहास का विषय पेलोपोनेसियन युद्ध को बनाया था। उनके द्वारा लिखित पुस्तक हिस्टोरिका थी।

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

राजस्थान
- प्रागैतिहासिक काल
- आद्यऐतिहासिक काल
- ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है। मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं । इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपि कहते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी । इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं । इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है । जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे वैदिक काल जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

प्राचीन इतिहास के स्रोत – पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत ।

- **राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :-**

  इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – "ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता है लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की । इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है ।

  भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं ।

  महाभारत के लेखक "वेदव्यास" माने जाते हैं। महाभारत का प्राचीन नाम "जय सहिंता" था।
- राजस्थान इतिहास के जनक "कर्नल जेम्स टॉड" कहे जाते हैं । वे 1818 से 1821 के मध्य **मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल** एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा। अतः कर्नल टॉड को **"घोड़े वाले बाबा"** कहा जाता है। इन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" है।
- कर्नल जेम्स टॉड की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया" का इसकी मृत्यु के 1837 में उनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।

- अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ को पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है।
- अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है।
- तिथि युक्त एवं समसामयिकी होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
- प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा संस्कृत थी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी व राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।
- अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी** कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी **भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।**
- शक शासक रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के अढ़ाई दिन के झोंपड़े की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई. का है।

अशोक के अभिलेख :-

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी से मिले हैं।
- भाब्रू अभिलेख की खोज कैप्टेन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख से अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में **कलकत्ता संग्रहालय** में सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख :-

- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीनतम अभिलेख** है। 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख अजमेर के बड़ली गाँव के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।
- वर्तमान में यह **अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।**

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ (सिरोही) से प्राप्त हुआ है।
- इससे अर्बुदांचल के राजा राज्जिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।
- दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।
- इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।
- शिलालेख में मेवाड़ के गुहिल वंश शासक शिलादित्य का उल्लेख है।

मानमोरी का अभिलेख :-

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख में इसके **रचयिता पुष्य** तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।
- राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।
- इस अभिलेख में **'अमृत मंथन'** का उल्लेख मिलता है।
- इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों **(महेश्वर, भीम, भोज एवं मान)** के बारे में जानकारी मिलती है।

मण्डोर अभिलेख :-

- जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली विष्णु तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.):-

- प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

बड़वा अभिलेख (238 – 239 ई.) :-

- यह बड़वा (कोटा) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मौखरी

❖ प्रागैतिहासिक स्थल (प्राचीन सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

प्राचीन सभ्यताएँ

- पाषाणकालीन सभ्यताएँ → बागौर (भीलवाड़ा)
- कांस्ययुगीन सभ्यताएँ → कालीबंगा
- ताम्रकालीन सभ्यताएँ →
  - आहड़ सभ्यताएँ (उदयपुर)
  - ताम्रवती नगरी
  - आघाटपुर
  - बैराठ (जयपुर)
  - गिलुण्ड (राजसमंद)
  - रंगमहल (हनुमानगढ़)
  - ओझियाना (भीलवाड़ा)
  - नगरी (चित्तौड़)
  - सुनारी झुंझुनूं
  - जोधपुरा (जयपुर)

1. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण- Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषाण उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे । ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों

का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।

- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

कांस्ययुगीन सभ्यताएं -

2. कालीबंगा की सभ्यता -

कालीबंगा
- → सरस्वती नदी के किनारे
- → हनुमानगढ़ जिले
- → खोज - अमलानंद घोष (1952)
- → पक्की सड़के
- कच्ची / पक्की ईंटें - 30x15x7.5 (आकार)
- → पक्की नालियाँ

→ जूते हुए खेत

यज्ञ कुंड / अग्नि वेदिकाएँ

→ धर्म गुरु – पुरोहित, चिकित्सक, कृषक, कुंभकार, दस्तकार, व्यापारी, आदि की जानकारी

→ पशुपालन – कुत्ता – पालतू जीव

- कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है – **सरस्वती नदी**। इसे **द्रषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं।

यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं, विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज –

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में –

- ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ –

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी। इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को **'जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति'** के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में ये कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं। इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था।

शाह के हारने पर मेवाड़ के सरदारों ने पुनः चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया। फिर विक्रमादित्य पुनः वहाँ के शासक हो गए।

- बनवीर ने उदयसिंह का वध करना चाहा लेकिन स्वामीभक्त पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर उदय सिंह को बचा लिया। मेवाड़ का स्वामी बनकर बनवीर राज्य करने लगा। उदयसिंह द्वितीय को लेकर पन्नाधाय कुंभलनेर पहुंची। वहां के किलेदार **आशा देवपुरा** ने उन्हें अपने पास रख लिया।

महाराणा उदयसिंह (1537-1572 ई.)

- 1537 में कुछ सरदारों ने उदयसिंह को मेवाड़ का स्वामी मानकर कुम्भलगढ़ में राज्याभिषेक कर दिया। उदयसिंह ने सेना एकत्रित कर कुंभलगढ़ से ही चित्तौड़ पर चढ़ाई की। बनवीर मारा गया। 1540 ई. में उदयसिंह अपने पैतृक राज्य का स्वामी बना। 1559 ई. में महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर की नींव डाली।
- मुग़ल बादशाह अकबर ने 23 अक्टूबर, 1567 को चित्तौड़ किले पर आक्रमण किया। महाराणा उदयसिंह ने मालवा के पदच्युत शासक राज बहादुर को अपने यहाँ शरण देकर अकबर के लिए चित्तौड़ पर आक्रमण करने का अवसर प्रदान कर दिया। महाराणा उदयसिंह राठौड़ जयमल और रावत पत्ता को सेनाध्यक्ष नियुक्त कर कुछ सरदारों के साथ मेवाड़ के पहाड़ों में चले गए। अकबर से युद्ध में **जयमल और कल्ला राठौड़** हनुमान पोल व भैरव पोल के बीच और पत्ता रामपोल के भीतर वीरगति को प्राप्त हुए।
- राजपूत स्त्रियों ने जौहर किया। **25 फरवरी, 1568** को अकबर ने किले पर अधिकार कर लिया। यह चित्तौड़ दुर्ग का **तीसरा साका** था। **जयमल और पत्ता** की वीरता पर प्रसन्न होकर अकबर ने आगरा जाने पर हाथियों पर चढ़ी हुई, उनकी पाषाण की मूर्तियां बनवाकर किले के द्वार पर खड़ी करवाई **महाराणा उदयसिंह** का 28 फरवरी, 1572 ई. को गोगुन्दा में होली के दिन देहांत हो गया। जहां उनकी छतरी बनी हुई है।

महाराणा प्रताप सिंह (1572-1597 ईस्वी.)

जन्म - 9 मई, 1540

जन्म स्थान - कुम्भलगढ़ दुर्ग

पिता - राणा उदय सिंह

माता - महाराणी जयवंता बाई

विवाह - उन्होंने 11 शादियाँ की थी - महारानी अजब्धे पंवार, अमरबाई राठौड़, शहमति बाई हाडा, लखाबाई, जसोबाई चौहान और 6 पत्नियाँ

संतान - अमर सिंह, भगवान दास और 17 पुत्र

प्रारम्भिक जीवन और बचपन

- प्रताप का जन्म भारतीय तिथि के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल की तृतीय को हुआ था, इस कारण आज भी प्रतिवर्ष इस दिन महाराणा प्रताप का जन्म दिवस मनाया जाता है ।
- राणा उदय सिंह द्वितीय के 33 पुत्र थे, जिनमें प्रताप सिंह सबसे बड़े पुत्र थे, प्रताप बचपन से ही स्वाभिमानी और देशभक्त थे, साथ ही वो बहादुर और संवेदनशील भी थे। उन्हें खेलों और हथियार के प्रशिक्षण में रुचि थी। वास्तव में प्रताप को मेवाड़ के प्रति अपनी जिम्मेदारी की समझ बहुत जल्द आ गयी थी, इस कारण बहुत कम उम्र में ही उन्होंने हथियार, घुड़सवारी, युद्ध का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। वो सभी राजकुमारों में सबसे ज्यादा प्रतिभावान और बलशाली राजकुमार थे। महाराणा प्रताप जयमल मेडतिया के शिष्य थे, जो बहुत वीर था, जब **बहलोल खान** ने जयमल को युद्ध के लिए ललकारा तो उन्होंने खान को घोड़े के साथ उसके दो टुकड़े कर दिए।
- 1567 में चित्तौड़ को अकबर की मुग़ल सेना ने चित्तौड़ को सब तरफ से घेर लिया था, ऐसे में मुगलों के हाथों में पड़ने की जगह महाराणा उदयसिंह ने अपने परिवार के साथ गोगुन्दा जाने का निश्चय किया, हालांकि उस समय भी राजकुमार प्रताप वहीं रहकर युद्ध करना चाहते थे लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियां होने के कारण उन्हें अपने परिवार के साथ गोगुन्दा जाना पड़ा। उदयसिंह और उनके मंत्रियों ने गोगुन्दा में ही अस्थायी शासन शुरू किया।

कुंवर प्रताप से महाराणा प्रताप

- उदयसिंह ने मरने से पहले अपनी सबसे छोटी रानी के **पुत्र जगमाल** को राजा नियुक्त किया और प्रताप ने सबसे बड़ा और योग्य पुत्र होते हुए भी ये स्वीकार कर लिया, लेकिन मंत्री इस बात से सहमत नहीं हुए क्योंकि जगमाल में राजा बनने

के गुण नहीं थे। **1572 में उदयसिंह** की मृत्यु हो गयी। इसलिए सबने मिलकर ये निर्णय लिया कि सत्ता महाराणा प्रताप को दी जायेगी, महाराणा प्रताप सिंह ने भी उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए, **1 मार्च 1572** को गद्दी संभाल ली, इस कारण जगमाल को क्रोध आ गया और वो अकबर की सेना में शामिल होने के लिए अजमेर के लिए रवाना हो गया और अकबर की मदद के बदले जहाजपुर की जागीर हासिल करना ही उसकी मंशा थी।

महाराणा प्रताप और अकबर

- महाराणा प्रताप के समय अकबर दिल्ली का शासक था, उसकी रणनीति थी कि वो हिन्दू राजाओं की शक्ति को अपने अधीन करके उन पर शासन करता था। इसी क्रम में युद्ध को नजरअंदाज करते हुए बहुत से राजपूतों ने युद्ध की जगह अपनी बेटियों के डोली अकबर के हरम में भेज दी, जिससे कि संधि हो सके, लेकिन मेवाड़ ऐसा राज्य नहीं था, यहाँ अकबर को काफी संघर्ष करना पड़ा। उदयसिंह के समय राजपूतों ने जब चित्तौड़ छोड़ दिया था तो मुगलों ने शहर पर कब्जा कर लिया हालांकि वो पूरे मेवाड़ को हासिल करने में नाकाम रहे, और अकबर पूरे हिन्दुस्तान पर शासन करना चाहता था इसलिए पूरा मेवाड़ उसका लक्ष्य था। केवल 1573 में ही अकबर ने 6 बार संधि वार्ता प्रस्ताव भेजे लेकिन प्रताप ने सबको अस्वीकार कर दिया, अकबर के पांच बार संधि वार्ता भेजने के बाद प्रताप ने अपने बेटे अमरसिंह को अकबर के दरबार में संधि अस्वीकार करने के लिए भेजा, इसके बाद सबसे अंतिम प्रस्ताव अकबर के बहनोई मानसिंह लेकर आये थे और अंतिम बार भी संधि प्रस्ताव के नहीं मानने से अकबर बेहद क्रोधित हुआ और उसने मेवाड़ पर हमला कर दिया।
- वैसे कहा जाता है कि अकबर ने राणा प्रताप से ये तक कहा था कि वो यदि अकबर से संधि कर ले तो अकबर प्रताप को आधा हिन्दुस्तान दे देगा लेकिन महाराणा प्रताप ने किसी की भी अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया।

हल्दीघाटी का युद्ध

- 1576 में अकबर ने राजपूत सेनापति मानसिंह प्रथम और आसफ खान को प्रताप पर आक्रमण करने के लिए भेजा, जबकि प्रताप ने ग्वालियर के राम शाह तंवर और उनके तीन पुत्र रावत कृष्णादासजी चुडावत, मानसिंह झाला और चन्द्रसेन जी राठौड़ और अफगान से **हाकिम खान सुर** के अलावा भील समुदाय के मुखिया **राव पूंजा** की मदद से एक छोटी सी सेना गठित की। मुग़ल सेना में जहाँ 80,000 सैनिक थे, वहीं राजपूत सेना मात्र 20,000 सैनिकों की थी। इस तरह उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर हल्दीघाटी में युद्ध सम्मुख युद्ध शुरू हुआ। यह युद्ध **18 जून 1576** को 4 घंटे के लिए हुआ, मुग़ल सेना को प्रताप के भाई शक्ति सिंह ने गुप्त मार्ग बता दिया, जिससे मुगलों को आक्रमण की दिशा मिल गयी। मुग़ल सेना के घुड़सवारों का नेतृत्व **मानसिंह प्रथम** कर रहे थे, प्रताप ने मानसिंह का सामना खुद करने का निश्चय किया और अपना घोड़ा उनके सामने ले गए लेकिन चेतक और प्रताप दोनों मानसिंह के हाथी से घायल हो गए। इसके बाद मानसिंह झाला ने अपना कवच प्रताप से बदल लिया था जिससे कि मुग़ल सेना में भ्रम पैदा हो सके, और राणा प्रताप बचकर निकल सके। हल्दीघाटी के युद्ध के बाद अरावली के कुछ हिस्सों को छोडकर पुरा मेवाड़ मुगलों के हाथ में चला गया।
- जुलाई 1576 में प्रताप ने गोगुन्दा को मुगलों से वापिस कब्जे में ले लिया और कुम्भलगढ़ को अपनी अस्थायी राजधानी बनाया, लेकिन अकबर ने खुद प्रताप पर चढ़ाई कर दी और गोगुन्दा, उदयपुर एवं कुम्भलगढ़ पर कब्जा कर लिया जिससे महाराणा वापिस पहाड़ों में लौटने को मजबूर हो गये।
- अगले कुछ वर्षों में कुम्भलगढ़ एवं चित्तौड़ ने अपनी खोयी हुई, सम्पति को वापिस कब्जे में ले लिया और साथ ही गोगुन्दा, रणथम्भौर और उदयपुर को भी छीन लिया। जब महाराणा प्रताप ने अकबर के सामने झुकने से मना कर दिया तब अकबर ने युद्ध की घोषणा कर दी। महाराणा ने अपनी राजधानी चित्तौड़ से हटाकर अरावली की पहाड़ियों में **कुम्भलगढ़** ले गए, जहां उन्होंने आदिवासियों और जनजातियों को सेना में शामिल करना शुरू किया। इन लोगों को युद्ध का कोई अनुभव नहीं था, महाराणा ने उन्हें प्रशिक्षण दिया, इस तरह उन्होंने समाज के दो वर्गों को एक उद्देश्य के लिए एक दिशा में लाने का प्रयास किया। 1579 के बाद अकबर की बंगाल, बिहार और पंजाब पर

ध्यान होने के कारण मेवाड़ पर पकड़ ढीली होने लगी, इस परिस्थिति का फायदा उठाकर प्रताप ने दान **शिरोमणि भामाशाह** के दान किये धन से कुम्भलगढ़ और चित्तौड़ के आस-पास के क्षेत्र पर वापिस कब्जा कर लिया, उन्होंने **40,000** की सेना एकत्र करके गोगुन्दा, कुम्भलगढ़, रणथम्भौर और उदयपुर को भी मुगलों से मुक्त करवा लिया। 6 महीने बाद अकबर ने फिर से हमला किया लेकिन फिर से उसे मुंह की खानी पड़ी और आखिर में अकबर ने 1584 में जगन्नाथ को बड़ी सेना के साथ मेवाड़ भेजा लेकिन 2 वर्ष के संघर्ष के बाद भी वह राणा प्रताप को नहीं पकड़ सका।

- इस तरह हल्दीघाटी का युद्ध हो या इसके पश्चात् के छोटे-बड़े सम्मुख/गरिल्ला युद्ध दोनों पक्षों ने कभी हार नहीं स्वीकार की, और इन सब में राष्ट्र के लिए जो आज भी गौरव का विषय है वो राणा प्रताप का निरंतर संघर्ष और मेवाड़ को मुक्त करवाने की जिजीविषा है, जो उनकी मृत्यु तक उनके साथ थी।

दिवेर का युद्ध (अक्टूबर, 1582)

- महाराणा प्रताप ने मेवाड़ की भूमि को मुक्त कराने का अभियान दिवेर से प्रारंभ किया। दिवेर वर्तमान राजसमंद जिले में उदयपुर-अजमेर मार्ग पर स्थित है। दिवेर के शाही थाने का मुख्तार सम्राट अकबर का काका सुल्तान खान था। महाराणा प्रताप ने उस पर अक्टूबर 1582 में आक्रमण किया। मेवाड़ और मुग़ल सैनिकों के मध्य निर्णायक युद्ध हुआ। महाराणा सम्राट को यश और विजय प्राप्त हुई, दिवेर की जीत की ख्याति चारों ओर फैल गई।
- प्रताप के जीवन के बहुत बड़े विजय अभियान का यह शुभ और कीर्तिदायी शुभारम्भ था। दिवेर की जीत के बाद महाराणा प्रताप ने चावंड में अपना निवास स्थान बनाया। अकबर ने अब पुनः मेवाड़ की ओर ध्यान देना प्रारंभ किया। प्रताप अब भी परास्त नहीं हुआ है, यह भारत विजेता सम्राट कैसे सहन कर सकता है। अतः अकबर ने आमेर के राजा भारमल के छोटे पुत्र जगन्नाथ कछवाहा के नेतृत्व मे 5 दिसंबर 1584 को एक विशाल सेना मेवाड़ के विरुद्ध रवाना की लेकिन जगन्नाथ को भी कोई सफलता नहीं मिली। वह भी प्रताप को नहीं पकड़ सका। यह अकबर का प्रताप के विरुद्ध अंतिम अभियान था।
- अब अकबर मेवाड़ मामले में इतना निराश हो चुका था कि छुटपुट कारवाई उसे निरर्थक लगी और बड़े अभियान के लिए वह अवकाश नहीं निकाल सका। 1586 से 1596 तक दस वर्ष की सुदीर्घ अवधि मे प्रताप को जहाँ का तहाँ छोड़ दिया गया। इसे अघोषित संधि कहा जा सकता है अथवा अपनी विवशता की अकबर द्वारा परोक्ष स्वीकृति, प्रताप ने 1585 में अपने स्थायी जीवन का आरम्भ चावंड मे मेवाड़ की नई राजधानी स्थापित करके किया।
- प्रताप के अंतिम बारह वर्ष और उनके उत्तराधिकारी महाराणा अमरसिंह के राजकाज के प्रारंभिक 16 वर्ष चावंड मे बीते। चावंड 28 साल मेवाड़ की राजधानी रहा। चावंड गांव से लगभग आधा मील दूर एक पहाड़ी पर प्रताप ने अपने महल बनवाए। 19 जनवरी 1597 को प्रताप का चावंड मे देहांत हुआ। चावंड से कुछ दूर बांडोली गांव के निकट महाराणा का अंतिम संस्कार हुआ। जहां उनकी छतरी बनी हुई है।

महाराणा प्रताप और चेतक

- प्रताप के विश्वसनीय घोड़े का नाम चेतक था, जो कि 11 फीट लम्बा था। चेतक पर नीले रंग का निशान था इसलिए राणा प्रताप को "नीले घोड़े रा असवार कहा जाता है, जिसका मतलब **"नीले घोड़ी की सवारी करने वाला"** होता है।
- हल्दीघाटी के युद्ध में मानसिंह के साथ युद्ध करते हुए महाराणा प्रताप और उनका घोड़ा घायल हो गया था, फिर भी **26 फीट चौंड़ी** नदी पार करने में उसने अपने स्वामी का सहयोग किया था, लेकिन इसके बाद वो ज्यादा जीवित नहीं रह सका। चेतक ने अपनी जान देकर भी अपने स्वामी की जान बचाई थी, महाराणा चेतक की मृत्यु पर बालक की तरह रोये थे। चेतक की मृत्यु के बाद ही **शक्ति सिंह** को अपनी गलती का एहसास हुआ था और उसने **अपना** घोड़ा प्रताप को दे दिया।
- प्रताप चेतक को नहीं भूल सके, और बाद में उन्होंने उस जगह पर एक उद्यान बनवाया, जहां पर चेतक ने अंतिम सांस ली थी।

अमरसिंह प्रथम (1597-1620 ईस्वी)

- राणा अमरसिंह मेवाड़ राजस्थान के **सिसोदिया राजवंश** के शासक थे। इनके पिता महाराणा प्रताप थे तथा महाराणा उदयसिंह इनके दादा थे । राणा अमरसिंह भी महाराणा प्रताप जैसे वीर थे और

मेवाड़ के पुरातात्विक स्त्रोत

नगरी का लेख (200 बी.सी. - 150 बी.सी.)

- यह चित्तौड़गढ़ जिले के प्राचीनतम नगर माध्यमिक या नगरी से प्राप्त शिलालेख है, जो जैन या बौद्धों से संबंधित है। यह बहुत छोटा शिलालेख है।

नाथ-प्रशस्ति-एकलिंगजी (971 ई.)

- यह उदयपुर के पास स्थित कैलाशपुरी एकलिंगजी के लकुलीश मंदिर में नरवाहन के समय का संस्कृत भाषा व देवनागरी लिपि का अभिलेख है।

जैन कीर्ति स्तंभ लेख (13 वीं सदी)

- चित्तौड़ दुर्ग में स्थित रणकपुर के चौमुखा मंदिर (आदिनाथ मंदिर) में सस्कृत भाषा व नागरी लिपि में उत्कीर्ण इसमें कुम्भा के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

विजय, स्तंभ प्रशस्ति (1460 ई.)

- चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित विजय स्तंभ पर उत्कीर्ण। इसका प्रशस्तिकार कवि अत्रि व उसका पुत्र **महेश भट्ट** था। इसमें बाण, हम्मीर मोकल का उल्लेख मिलता है। गणेश, शिव स्तुति मिलती है।
- इसमें कुम्भा द्वारा रचित ग्रन्थों, विरुदों ; दानगुरु, राजगुरु, शैलगुरुद्ध का उल्लेख तथा मालवा व गुजरात की सम्मिलित सेना को हराने का उल्लेख मिलता है।

कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.) :-

- यह लेख राजसमंद जिले के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भस्याम मंदिर (मामादेव का मंदिर - वर्तमान नाम) में संस्कृत भाषा एवं नागरी लिपि में पांच शिलाओं पर उत्कीर्ण है। । इसमें भौगोलिक स्थिति का, जनजीवन का, एकलिंग मंदिर का वर्णन, चित्तौड़ का वर्णन- (चित्रांग ताल, दुर्ग, वैष्णव तीर्थ के रूप में) किया गया है।
- इसमें मुख्यत: कुम्भा के विजयों का विस्तार से वर्णन मिलता है।
- इसका रचयिता कान्हा व्यास है। जबकि डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार इसका रचयिता महेश भट्ट है।

जगन्नाथराय प्रशस्ति (1652) :-

- यह जगदीश मंदिर, उदयपुर में उत्कीर्ण है।
- इसमें बापा से साँगा तक की उपलब्धियों का वर्णन है।
- यह मंदिर जगतसिंह प्रथम द्वारा बनाया गया।
- यह पंचायतन शैली का लेख है। जिसे अर्जुन की निगरानी में तथा सूत्राकार भाणा व उसके पुत्रा मुकुन्द की अध्यक्षता में बनवाया गया।

राजप्रशस्ति (1676) :-

- यह प्रशस्ति राजसंमद झील के तट पर नौ चौकी स्थान के ताकों में 25 काली पाषाण शिलाओं पर पद्य संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है, यह विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति अभलेख है।
- इसका रचयिता तैलंग ब्राह्मण रणछोड़ भट्ट था।
- मेवाड़ के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।
- यह प्रशस्ति जगतसिंह प्रथम तथा राजसिंह के काल की उपलब्धियां जानने के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत है, यह विश्व की सबसे बड़ी पाषाण उत्कीर्ण प्रशस्ति है।

- **मेवाड़ के पुरातात्विक स्रोत**

स्रोत	समय	विशेषताएँ
1. नगरी का लेख	200 BC – 150 BC	-चित्तौड़ जिले में - जैन / बौद्धों से
2. नाथ प्रशस्ति	971 ईस्वी.	- नरवाहन के समय का संस्कृत भाषा व देवनागरी लिपि का अभिलेख
3. जैन कीर्ति स्तंभ	13 वीं सदी	- चित्तौड़ दुर्ग में, संस्कृत भाषा / देवनागरी लिपि - महाराणा कुंभा की जानकारी
4. विजय स्तंभ प्रशस्ति	1460 ईस्वी.	चितौडगढ़ दुर्ग, वास्तुकार – अत्रि व महेश

		- हम्मीर व मोकुल की जानकारी
5. कुम्भलगढ़ शिलालेख	1460 ईस्वी.	-संस्कृत भाषा में - कुंभा की विजयों की जानकारी
6. राज प्रशस्ति	1676 ईस्वी.	- राजसमंद झील के किनारे, नौ चौकी स्थान पर - संस्कृत भाषा में - विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति - रचियता – रणछोड़ तैलंग

❖ चौहान वंश का इतिहास

➢ **अजमेर के चौहान**

वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम)

शाकभरी का प्राचीन नाम सपादलक्ष था। सपादलक्ष का अर्थ सवा लाख गांवों का समूह। यहीं पर वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) ने चौहान वंश की नींव डाली। इसलिए इन्हें चौहानों का आदि पुरुष भी कहते हैं। वासुदेव प्रथम शाकम्भरी/सांभर को अपनी राजधानी बनाया। सांभर झील का निर्माण भी इसी शासक ने करवाया।

पृथ्वीराज प्रथम

चौहान वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पृथ्वीराज प्रथम था। पृथ्वीराज प्रथम ने गुजरात के भडोंच पर अधिकार कर वहां आशापूर्णा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अजयराज प्रथम

पृथ्वीराज के बाद अजयराज शासक बना। **अजयराज ने 1113 ई. में पहाडियों के मध्य अजमेरु (अजमेर) नगर की स्थापना की** और इसे नई राजधानी बनाया। अजयराज ने पहाडियों के मध्य अजमेर के दुर्ग का निर्माण करवाया। मेवाड़ के पृथ्वीराज सिसोदिया ने 15 वीं सदी में इसका नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया। इस दुर्ग को पूर्व का जिब्राल्टर कहा जाता है।

अर्णोराज (1133-1155 ई.)

अर्णोराज अजयराज का पुत्र था। अर्णोराज का शासनकाल 1133 -1155 ई. तक रहा।

1. **अर्णोराज ने 1137 ई. में आनासागर झील का निर्माण करवाया** ।
2. **आर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण अर्णोराज ने करवाया** ।
3. अर्णोराज को गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में पराजित किया था
4. अर्णोराज के पुत्र जगदेव ने अर्णोराज की हत्या कर दी इसलिए जगदेव को चौहानों में पितृहन्ता कहा जाता है ।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

1. बीसलदेव का कार्यकाल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहा जाता है।
2. **बीसलदेव को कविबांधव भी कहा जाता है।**
3. बीसलदेव ने हरिकेलि (नाटक) की रचना की। जिसमें शिव-पार्वती व कुमार कार्तिकेय का वर्णन है।
4. बीसलदेव दरबारी कवि **नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो ग्रन्थ की रचना की।**
5. बीसलदेव कवि **सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की।**
6. विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलसागर तालाब (वर्तमान बीसलपुर बाँध के स्थान पर) का निर्माण करवाया था ।
7. 1153 से 1156 ई. के मध्य विग्रहराज (बीसलदेव) ने अजमेर में एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया जिसे **1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने संस्कृत विद्यालय को तुडवाकर अढ़ाई दिन का झोपडाऽ बनवाया।**
8. विग्रहराज के बारे में किल होर्न ने लिखा है कि **"वह उन हिन्दू शासको में से एक था जो कालीदास व भवभूति से होड़ कर सकता था"।**

- पृथ्वीराज राठौर नागौर दरबार में उपस्थित हुआ
- महाराजा रायसिंह को राजपूताने का कर्ण कहा जाता है।
- सूरतसिंह ने हनुमानगढ़ बसाया
- एकीकरण विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने वाली प्रथम रियासत बीकानेर थी।
- सार्दुलसिंह बीकानेर के राठौर वंश अंतिम शासक था,
- किशनसिंह ने 1612में किशनगढ़ बसाया
- महाराजा सावंतसिंह ने कृष्ण भक्ति में अपना नाम नागरीदास रखा
- महाराजा सुमेरसिंह के समय किशनगढ़ को 25मार्च 1948 में राजस्थान संघ में मिला लिया गया
- मालवा के परमारों की उत्पति आबू से मानी जाती है।
- चूड़ामन जाट ने भरतपुर में जाट राज्य की स्थापना की,
- महाराजा सूरजमल ने लोहागढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया
- राजा केहर ने तनोटमाता मंदिर का निर्माण करवाया
- राव घड़सी ने जैसलमेर में घड़सीसर तालाब का निर्माण करवाया
- विजयपाल करौली का संस्थापक था।
- हरवक्षपाल ने 9 नवंबर 1817 में अंग्रेजो से संधि की।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

RAS mains में पूछे गए प्रश्न व संभावित प्रश्नः-

प्रश्न-1. हल्दीघाटी का युद्ध कब और किसके मध्य हुआ तथा इनका क्या परिणाम निकला ? (15शब्द)

प्रश्न-2. महाराणा कुंभा की उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए। (50 शब्द)

प्रश्न-3. मध्यकालीन राजस्थान के प्रमुख शासकों की उपलब्धियों पर एक संक्षिप्त निबंध लिखिये। (100 शब्द)

प्रश्न-4. मुगल-मेवाड़ संधि (1615 ई.) की मुख्य शर्तों का उल्लेख कीजिये। (50 शब्द)

प्रश्न-5. रणथम्भौर दुर्ग के सैन्य महत्त्व को समझाइये। (50 शब्द)

प्रश्न-6. कला एवं साहित्य के क्षेत्र में सवाई जयसिंह के योगदान का वर्णन कीजिये। (100 शब्द)

प्रश्न-7. 1817 -1818 ई. में राजपुत शासकों एवं अंग्रेज सरकार के मध्य हुई संधियो के परिणामों को संक्षिप्त रूप में बताइये। (100 शब्द)

प्रश्न-8. 1857 ई. की क्रांति के दौरान आउवा क्रांति के योगदान का उल्लेख किजिए। (100 शब्द)

- ***खरगढ़ी*** - सार्वजनिक निर्माण या दुर्गों के भीतर निर्माण कार्यों के लिए गाँव से बेगार में गधों को मंगवाया जाता था, परन्तु बाद में गधों के बदले खरगढ़ी लाग वसूल की जाने लगी ।

  खिचड़ी लाग - जागीरदार द्वारा अपने प्रत्येक गाँव से उनकी आर्थिक स्थिति के अनुसार ली जाने वाली लाग राज्य की सेना जब किसी गाँव के पास पड़ाव डालती है तब उसके भोजन के लिए गाँव के लोगों से वसूली जाने वाली लाग खिचड़ी लाग कहलाती थी ।

- ***अंग लाग -*** प्रत्येक किसान के परिवार के प्रत्येक सदस्य से जो 5 वर्ष से ज्यादा आयु का होता था प्रति सदस्य रु। लिया जाता था ।

अध्याय – 5

राजस्थान में मराठा साम्राज्य

- मराठा शक्ति के संस्थापक छत्रपति शिवाजी अपने आपको वैदिक कालीन क्षत्रियों का वंशज मानते थे, और अपने को मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश का वंशज बताते थे। अतः शिवाजी ने इस रक्त संबंध के आधार पर राजपूतों से राजनैतिक संबंध स्थापित करने का प्रयास किया था। शिवाजी के काल में राजपूत और मराठों के बीच अप्रत्यक्ष संबंध स्थापित हुए थे।
- शिवाजी मुग़ल साम्राज्य और बीजापुर के मुस्लिम राज्य के विरुद्ध अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहते थे, जबकि राजपूत शासक जसवंतसिंह और मिर्जा राजा जयसिंह मुग़ल साम्राज्य की सुरक्षा और विस्तार के लिये शिवाजी की गतिविधियों को नियंत्रित करके उसकी नवोदित शक्ति को कुचलना चाहते थे।
- मेवाड़ के महाराणा राजसिंह और शिवाजी समकालीन थे और दोनों ने मुग़ल सम्राट औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति का विरोध किया था। औरंगजेब ने जब हिन्दुओं पर पुनः जजिया कर लगाया था तब केवल मेवाड़ और **महाराष्ट्र** ने मुग़ल सम्राट के पास विरोध पत्र भेजे थे। इससे स्पष्ट होता है कि मुगलों के प्रति नीति एवं लक्ष्य निर्धारित करने में महाराणा राजसिंह और शिवाजी के बीच घनिष्ठ और मधुर संबंध स्थापित हुए थे।
- औरंगजेब ने शिवाजी की शक्ति का दमन करने के लिये पहले शाइस्ता खाँ और जसवंतसिंह को भेजा था, लेकिन उन्हें अपने अभियान में सफलता नहीं मिली। खफीखाँ ने जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह द्वारा शिवाजी की शक्ति का दमन करने का दायित्व आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह को सौंपा, जिसने शिवाजी को शाही दरबार में उपस्थित होने के लिये राजी कर लिया। किन्तु जब औरंगजेब ने जयसिंह द्वारा शिवाजी को दिये गये वचन को भंग कर शिवाजी को बन्दी बना लिया, तब जयसिंह के पुत्र रामसिंह ने अप्रत्यक्ष रूप से शिवाजी की सहायता की और उसकी मुक्ति को संभव बनाया।

- 1667 ई. में जब औरंगजेब ने शाहजादे मुअज्जम और जसवंतसिंह को शिवाजी की शक्ति को कुचलने के लिए भेजा, तब शिवाजी ने जसवंतसिंह को पत्र लिखकर मुगलों से संधि करवाने में सहायता करने की प्रार्थना की थी और जसवंतसिंह की सलाह पर ही औरंगजेब ने शिवाजी को क्षमा करते हुए उसके साथ समझौता कर लिया था। इन तथ्यों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि राजपूत शासकों ने मराठों से अपने भावनात्मक संबंधों के आधार पर उनकी सहायता की, लेकिन मराठों ने केवल अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति करने के लिए राजपूत शासकों से सहयोग माँगा। आगे चलकर राजपूत-मराठा संबंधों में इसी तथ्य की प्रधानता दिखाई देती है। शिवाजी की मृत्यु के बाद उसके पुत्र शंभाजी के शासन काल में जब मारवाड़ के राठौड़ सरदार, महाराजा जसवंतसिंह के मरणोपरांत उत्पन्न पुत्र अजीतसिंह को मारवाड़ की गद्दी पर बैठाने के लिये मुगलों से संघर्ष कर रहे थे, उस समय औरंगजेब के पुत्र शाहजादे अकबर द्वारा राजपूतों के साथ मिलकर विद्रोह करने पर औरंगजेब ने उसे बंदी बनाना चाहा, तब वीर दुर्गादास राठौड़ के आग्रह पर शंभाजी ने शाहजादे अकबर को शरण देकर राजपूतों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास किया।
- औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही भारतीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय समाप्त हो गया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों में उत्तराधिकार संघर्ष छिड़ गया ।
- मुख्य संघर्ष उत्तर में स्थित शाहजादा मुअज्जम और दक्षिण में तैनात शाहजादा आजम के बीच था । शंभाजी की मृत्यु के बाद मुगलों ने, शंभाजी की विधवा पत्नी येसूबाई, उसका छोटा पुत्र शाहू और परिवार के कुछ सदस्यों को बंदी बना लिया था, जो इस समय आजम की हिरासत में थे। जब आजम दक्षिण भारत से उत्तर के लिये रवाना हुआ तब अपने साथ शाहू और उसके परिवार को भी लेता गया।
- नर्मदा नदी पार करने के बाद उसने शाहू को (शाहू के परिवार को नहीं) मुक्त कर उसे महाराष्ट्र जाने दिया। आजम और उसके सेनानायकों का विचार था कि शाहू के महाराष्ट्र में प्रवेश करते ही ताराबाई (शाहू के सौतेले भाई राजाराम की पत्नी) और शाहू के मध्य संघर्ष छिड़ जायेगा जिससे मराठों को मुग़ल क्षेत्रों पर धावे मारने का समय ही नहीं मिल सकेगा।
- मुगलों का यह विचार सही निकला, मराठे गृह-युद्ध में उलझ गये, जिससे उन्हें मुग़ल-प्रान्तों और राजपूत राज्यों की ओर ध्यान देने का समय नहीं मिला। फिर भी कुछ मराठा सेनानायक नर्मदा नदी को पार कर उत्तर भारत की ओर आये तथा मंदसौर के निकट मेवाड़ के क्षेत्रों में लूटमार करने लगे। मई 1711 ई. में मराठों ने मेवाड़ में प्रवेश कर लूटमार की, जिससे महाराणा संग्रामसिंह चिन्तित हो उठे।
- महाराणा संग्रामसिंह ने आमेर के सवाई जयसिंह तथा अन्य राजपूत शासकों को पत्र लिखकर मराठों के विरुद्ध एक संयुक्त योजना बनाकर मराठा शक्ति के विस्तार को रोकने के उपाय ढूँढने की बात कही ।
- 1712 ई. में मुग़ल बादशाह की मृत्यु के बाद जहाँदर शाह गद्दी पर बैठा, किन्तु सैयद बंधुओं की सहायता से फर्रुखसियर ने जहाँदर शाह को गद्दीच्युत कर स्वयं ने गद्दी हथिया ली।
- फर्रुखसियर के शासन काल में मराठों को मालवा से खदेड़ने के लिये आमेर के सवाई जयसिंह को मालवा की सूबेदारी दी गयी और जोधपुर के अजीतसिंह को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया गया। सवाई जयसिंह ने मालवा में अपनी प्रथम सूबेदारी के काल में मेवाड़ तथा अन्य राजपूत शासकों की सहायता से मराठों को अनेक स्थानों पर पराजित किया।
- परन्तु 1715 ई. में उसे जाटों के विरुद्ध भेज दिया गया। सवाई जयसिंह की अनुपस्थिति में मराठों के आक्रमण पुनः शुरू हो गये। राजपूत सैनिक मालवा में मराठों की घुसपैठ रोकने में पूर्णतया असफल रहे।

<u>राजस्थान में मराठों के प्रवेश के समय राजपूत राज्यों की स्थिति</u> :-

- मुग़ल साम्राज्य के पतनोन्मुख होने के फलस्वरूप राजस्थान में भी भयंकर अराजकता व्याप्त हो गयी। अब राजस्थान की राजनीति विभिन्न नरेशों के निजी स्वार्थ प्राप्ति के उद्देश्यों से प्रेरित हो चली। प्रान्त के जातीय जीवन में सदाचार, विश्वास और सच्चाई के लिये कोई स्थान नहीं रह गया था।

लक्ष्मण सिंह (डूंगरपुर)

(iv) चतुर्थ चरण

- राजधानी — जयपुर
- ↓ वृहत राजस्थान — उद्घाटन — 30 मार्च 1949 — राजस्थान दिवस
  - उद्घाटन — वल्लभभाई पटेल
- प्रधानमंत्री — हीरालाल शास्त्री
- संयुक्त राजस्थान + जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर
- महाराज प्रमुख – महाराणा भूपालसिंह
  - राजप्रमुख - सवाईमानसिंह द्वितीय जयपुर
  - वरिष्ठ राजप्रमुख – हनुमंत सिंह जोधपुर, भीम सिंह कोटा
  - कनिष्ठ राजप्रमुख – बहादुर सिंह (बूंदी), लक्ष्मण सिंह (डूंगरपुर)

(v) पाँचवा चरण

- संयुक्त वृहत राजस्थान — उद्घाटन — 15 मई 1949
- ↓ वित्तीय समिति
- ↓ शंकरराव देव समिति
- मत्स्य संघ + वृहत राजस्थान

(vi) छठवां चरण -

छठवां चरण
- → राजस्थान नाम दिया गया
- → 26 जनवरी 1950
- → प्रधानमंत्री – मनोनीत – हीरालाल शास्त्री

(vii) सातवाँ चरण –

सातवाँ चरण –
- 1 नवंबर 1956
- राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश पर
  - आबू देलवाड़ा – राजस्थान में विलय
  - अजमेर – मेरवाडा – राजस्थान में विलय
  - M.P. का सुनेल टप्पा – राजस्थान में विलय
- प्रधानमंत्री – मोहनलाल सुखाड़िया
- सत्यनारायण राव समिति (अध्यक्ष)
  - बी. विश्वनाथन
  - बी. के गुप्ता
  - राजधानी – जयपुर
  - राजस्व विभाग – अजमेर
  - शिक्षा विभाग – बीकानेर
  - कृषि विभाग – भरतपुर
  - वन एवं सहकारी विभाग – कोटा
  - खनिज विभाग – उदयपुर

❖ ***सिरोही की विलय संबंधी समस्याएँ व समाधान :*** -

➢ सिरोही का शासक नाबालिग था। वहाँ के शासन प्रबन्ध की देखभाल दोवागढ़ की महारानी की अध्यक्षता में एजेन्सी कॉउन्सिल कर रही थी उत्तराधिकार के प्रश्न पर भी विवाद था सिरोही राजपूताने की अन्य रियासतों के समान राजपूताना एजेंसी के अन्तर्गत आती थी। देश की स्वतंत्रता के कुछ समय पश्चात् रियासती विभाग ने सिरोही को राजपूताना एजेंसी से हटाकर 'वेस्टर्न इण्डिया एण्ड गुजरात स्टेटस एजेन्सी के अधीन कर दिया था। सिरोही की जनता ने रियासती विभाग का विरोध किया। सिरोही का वकील संघ भी इस निर्णय के खिलाफ था

➢ गोकुलभाई भट्ट जो राजस्थान कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष होने के साथ – साथ दोवागढ़ महारानी के सलाहकार भी थे, ने सिरोही को तत्काल केन्द्रशासित राज्य के रूप में ले लेने का सुझाव दिया।

➢ गुजराती समाज चाहता था कि सिरोही का विलय बंबई में हो माउंट आबू परम्परा तथा इतिहास की दृष्टि से गुजराती सभ्यता से जुड़ा है। दूसरी तरफ राजपूताना की जनता का तर्क था कि सिरोही की अधिकांश जनता गुजराती नही बल्कि राजस्थानी भाषा बोलती है। राजपूताना के अनेक शासकों ने अपने निवास हेतु आबू में अनेक विशाल भवनों का निर्माण कराया गया है।

➢ सरदार पटेल ने चतुराई से सिरोही राज्य का विभाजन कर दिया जिसके अनुसार आबूरोड़ और दिलवाड़ा तहसील बंबई में तथा शेष राज्य को राजस्थान में मिला दिया गया।

➢ इस निर्णय के विरुद्ध सिरोही में आन्दोलन शुरू हो गया जिसमे गोकुलभाई भट्ट तथा बलवंत सिंह मेहता की महत्त्वपूर्ण भागीदारी थी लेकिन सरदार पटेल ने अपनी कार्य-कुशलता व कूटनीति से विलय सम्बंधी समस्याओं का हल कर दिया गया।

बीकानेर के शासक का रुको और देखो नीति का विरोध : -

➢ देशी शासकों में संविधान सभा में प्रवेश के प्रश्न पर मतभेद था बीकानेर के शासक सार्दुलसिंह ने भोपाल के नबाव की ठरुको एवं देखो 'नीति का विरोध किया। उन्होंने इस नीति को आत्मघाती बताया तथा देशी शासकों को रियासतों में उत्तरदायी सरकारों की आवश्यकता पर बल दिया। इस राजनैतिक परिस्थिति पर जादुई असर पड़ा

तयारः नरेन्द्र-मण्डल की स्थायी समिति से कई शासक ने त्यागपत्र दे दिया।

- **मारवाड़ (जोधपुर) को विलय संबंधी जटिलताएँ व उसका समाधान :-**
- मोहम्मद अली जिन्ना मारवाड़ (जोधपुर) की रियासत को पाकिस्तान में मिलाना चाहता था। जोधपुर के शासक हनुवन्त सिंह जो कांग्रेस - विरोधी माने जाते थे, पाकिस्तान में सम्मिलित होकर अपनी स्वतंत्रता का स्वप्न देख रहे थे वे धौलपुर के महाराजा तथा भोपाल के नवाब की मदद से जिला से व्यक्तिगत रूप से मिले। महाराजा की जिन्ना से बन्दरगाह की सुविधा, रेलवे का अधिकार, अनाज तथा शास्त्रों के आयात आदि विषय में बातचीत हुई । जिन्ना ने उन्हें हर तरह की शर्तों को पूरा करने का आश्वासन दिया।
- सरदार पटेल किसी भी कीमत पर जोधपुर को पाकिस्तान में मिलते हुए नहीं देखना चाहते थे। अतः उन्होंने जोधपुर के महाराजा की शर्तों को स्वीकार कर लिया –
- महाराजा बिना किसी रुकावट के शास्त्रों का आयात कर सकेंगे।
- अकालग्रस्त इलाकों में खाद्यान्नों की सतत् आपूर्ति की जाएगी।
- महाराजा द्वारा जोधपुर रेलवे लाइन को कुच्छ राज्य के बन्दरगाह तक मिलाने में कोई रुकावट नही पैदा की जाएगी ।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

गत वर्ष के प्रश्न एवं संभावित प्रश्न : -

प्रश्न-1. 'एकीकृत राजस्थान' में सिरोही के विलय पर संक्षिप्त लेख लिखे । (50 शब्द) **RAS (Mains) 2021**

प्रश्न-2. राजस्थान के शास्त्रीय साहित्य में चारण साहित्य की महत्ता का परीक्षण कीजिये। (100 शब्द) **RAS (Mains) 2021**

गत परीक्षाओं में आये हुए प्रश्न :-

प्रश्न-1. अकबर के शासनकाल में लिखी गई किन्हीं दो फारसी कृतियों का उल्लेख कीजिए।

प्रश्न-2. अकबर के दीन ए इलाही की प्रकृति की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न-3. एकीकृत राजस्थान में सिरोही के विलय पर संक्षिप्त लेख लिखिए।

प्रश्न-4. राजस्थान में बेंगू किसान आंदोलन का आलोचनात्मक परीक्षण करें।

प्रश्न-5. राजस्थान के जागीरदारी क्षेत्रों में कृषक असंतोष के कारणों की विवेचना कीजिए।

प्रश्न-6. किस प्रकार 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास में एक निर्णायक मोड़ था?

प्रश्न-7. 1857 की क्रांति की प्रकृति का वर्णन कीजिए।

प्रश्न-8. राजस्थान के प्रजामंडल आंदोलन की मूलभूत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न-9. मालदेव की हुमायूं व शेरशाह संबंधों की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

प्रश्न-10. राजस्थान की राजनीतिक जागृति में प्रजामंडल आंदोलनों की भूमिका का परीक्षण कीजिए।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 2

राजस्थान की वास्तुशिल्प

मंदिर वास्तुकला परिचय :-

- राजस्थान का वास्तुशिल्प की श्रीवृद्धि में उल्लेखनीय योगदान रहा है। मन्दिर वास्तुशिल्प के उद्धव का स्रोत वे छोटे-छोटे मंदिर रहे हैं जिन्हें प्रारम्भ में लोगों की धार्मिक अनुभूतियों को प्रोत्साहित करने के लिए बनवाया गया था।
- राजस्थान केवल अपनी कीर्ति कथाओं या त्याग और बलिदानों के कारण ही यशस्वी नहीं है अपितु अपने असंख्य समृद्धशाली मन्दिरों के लिए भी प्रसिद्ध है स्थापत्य शिल्प के क्षेत्र में राजस्थान ने स्वयं अपनी एक अत्युतम शैली को जन्म दिया जो ओसिया, किराडु, हर्ष, अजमेर, आबू चन्द्रावती, बाडौली, गंगोधरा, मेनाल, चित्तौड़, जालौर और बागेंहरा के रमणीक मन्दिरों में दृष्टव्य है चौहानों, परमारों और कुछ अन्य राजपूत वंशो के महान निर्माताओं की संज्ञा दी जानी चाहिए और पृथ्वीराज विजय उनकी उपलब्धियों में मात्र जीते हुए युद्धों का ही नहीं वरन् उनके द्वारा निर्मित महान और श्रेष्ठ मन्दिरों के निर्माण की भी महान कहानी है।
- साथ-साथ बने हिन्दू और जैन मन्दिरों के निर्माण में स्थापत्य के सिद्धान्त एक-दूसरे के अत्यंत अनुरूप थे। मुख्य संस्थापक मंदिरों की रूपरेखा और योजना बनाने के लिए उत्तरदायी होता था। इनका निष्पादन शिल्पी, स्थापक, सूत्रग्राहिणी, तक्षक और विरधाकिन आदि कारीगर करते थे यद्यपि इन संरचनाओं में एक रूपता दृष्टिगोचर होती हैं तथापि इन पर क्षेत्रीय प्रभाव पड़े बिना नही रह सका जो मंदिरों, गर्भग्रहों, शिखरों और छतों के अलंकरणों में दृष्टव्य है।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अधिकांश राजाओं ने इन प्रजामण्डल आंदोलनों से भयभीत होकर भारतीय संघ में मिलना स्वीकार किया। जैसे जोधपुर महाराजा हनुवन्त सिंह, धौलपुर महाराजा उदयभान सिंह जैसे अनेक शासक पाकिस्तान में मिलना चाहते थे। लेकिन आंदोलन से जन्में भारी जनमत' के विरोध के कारण वे ऐसा नहीं कर सके। इस दृष्टि से प्रजामण्डल आंदोलन देश को राजनीतिक एकता के सूत्र में बाँधने की दिशा में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए।
- महिलाओं ने आंदोलन में हर कदम पर पुरुषों के 'साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया। यह इस आंदोलन की एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी।
- फिर प्रजामण्डल आंदोलन दलितोत्थान, आदिवासी उत्थान, शिक्षा पर जोर, शराब बंदी, नशीली वस्तुओं का प्रसार रोकना, मजदूरों के हितों में कानून निर्माण करवाना, चर्खा एवं खादी उत्पादन केन्द्रों की स्थापना, बाढ़ अकाल राहत में कार्य छूआ-छूत, ऊँच-नीच व जाति-पाति के भेदभाव आदि अनेक कार्यों एवं सुधारों को प्रोत्साहन दिया तो दूसरी ओर कन्या वध, बाल विवाह, दहेज प्रथा, बहुविवाह, पर्दा प्रथा, मृत्युभोज, बेगार एवं बलेठ प्रथा मधनिषेध, अशिक्षा आदि का विरोध कर जनजागृति पैदा की इससे आम जनता प्रजामण्डल आंदोलनों से जुड़ गई ।

राजस्थान में धार्मिक जागृति के कारण :-

- धर्म सदैव भारतीयों की आत्मा का स्वरूप रहा है। राजस्थान प्रदेश भी इस क्षेत्र में कभी पीछे नही रहा है। यहाँ के राजपूत शासक अपने धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने को तैयार रहे हैं। यहाँ के निवासी सूरमा एवं अपने धर्म पर मर मिटने वाले राजाओं के पद चिन्हों पर चलते रहे हैं। धर्म ने यहाँ के विभिन्न सम्प्रदान एवं वर्गों के लोगों की एकता के सूत्र में बाँध रखा है प्रारम्भ में यहाँ भी वैदिक धर्म ही प्रचलित था।
- ग्यारहवीं एवं बारहवीं शताब्दी में मुसलमानों ने निरन्तर उत्तर भारत पर आक्रमण किये, परन्तु राजस्थान के लोग वैदिक धर्म पर ही आचरण करते रहे। डॉ. जे. एन. आसोप ने उस वैदिक धर्म को ही पौराणिक स्मात धर्म की संज्ञा दी थी। इसका मतलब यह है कि राजस्थान के लोग विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा करते थे और वेदों में वर्णित कर्मकाण्डो को सम्पादित करवाते थे यहाँ के लोग वर्णाश्रम में विश्वास करते थे पुराणों में इसके प्रमाण प्राप्त होते हैं पुराणों को लोक-परम्परा का ग्रन्थ माना जाता है और उनसे वैदिक काल से लेकर राजपूत काल के प्रारम्भ तक की जानकारी प्राप्त होती है।

❖ मंदिर

भारत में मंदिर निर्माण का प्रारंभिक व प्रायोगिक काल गुप्तकाल के प्रारंभ से सातवीं शताब्दी तक का काल माना जाता है।

I. मंदिर निर्माण की शैलियाँ

भारत में मुख्यतः मंदिर निर्माण की 3 शैलियाँ है :-

1. नागर शैली / आर्य शैली → उत्तर भारत में
2. द्रविड़ शैली → दक्षिण भारत में
3. बेसर / चालुक्य शैली → मध्य भारत में [यह द्रविड व नागर शैली का मिश्रण है।]

- राजस्थान में अधिकांश मंदिर नागर शैली में बने हुए हैं।

राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियां -

I. प्रमुख मंदिर शैलियाँ-

मंदिर शैली	विशेषता
नागर शैली / आर्य शैली	• विशाल गुम्बद व विशाल गर्भगृह
द्रविड़ शैली	• स्तंभनुमा / पिरामिडनुमा मंदिर • छतें या शिखर गजप्रष्ठकृत
बेसर शैली	• द्रविड़ व नागर शैली का मिश्रण
ईकायतन शैली	• जो मंदिर एक ही देवता को समर्पित हो
पंचायत शैली	• मुख्या देवता व चारों ओंर किनारों पर चार अन्य देवताओं (शिव, सूर्य, गणेश, शनि) के छोटे-छोटे मंदिर • उदा.- ओसियां (जोधपुर) के मंदिर विशेषतः
महामारु / गुर्जर प्रतिहार शैली	• राजस्थान में 8 वी से 12 वी शताब्दी तक अत्यधिक प्रचलित थी। • हर्षनाथ मंदिर सीकर, किराडू मंदिर बाड़मेर
जैन शैली	• संगमरमर का अधिक प्रयोग हुआ है। इसमें तीर्थकारों की विशाल प्रतिमाएं है तथा ये मंदिर गुफानुमा होतें है।

(1.) नागर या आर्य शैली-

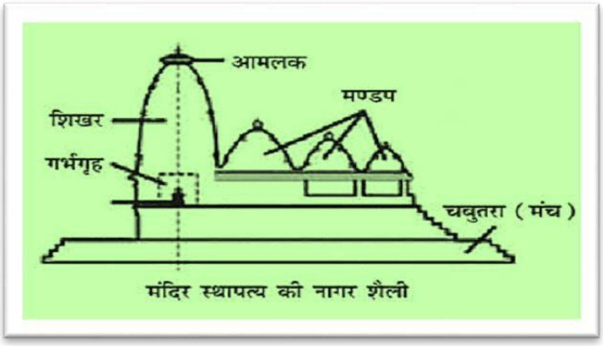

- ➢ उत्तरी भारत की शैली जिसमें मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बना होता है।
- ➢ मंदिर का शिखर आमलक और कलश में विभेदित होता है।
- ➢ मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह वर्गाकार होता है।
- ➢ पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को उत्तर भारतीय आर्य शैली कहा ।
- ➢ राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर),दधिमति माता मंदिर (नागौर),ओसिया के मंदिर (जोधपुर)।

(2.) भूमिज शैली

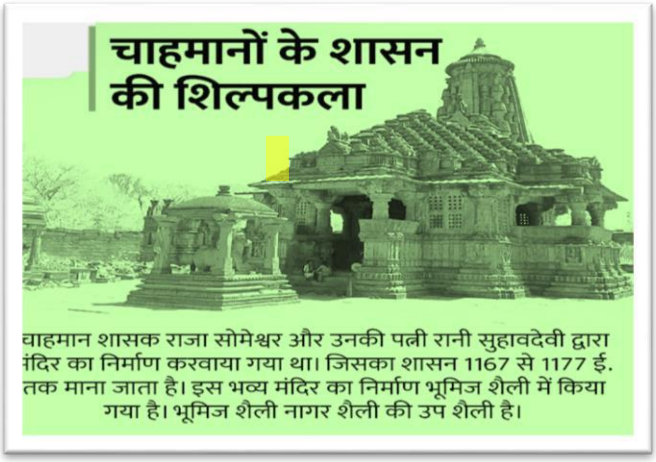

❖ **राजस्थान में मंदिर स्थापत्य की प्रमुख विशेषता :-**

➢ मंदिर धर्म व दर्शन की आधारशिला और सांस्कृतिक वैभव पराकाष्ठा के प्रतीक के रूप में माने जाते हैं। राजस्थान मंदिर शिल्प की दृष्टि से समृद्ध है। राजस्थान के मंदिरों में मिलने वाली विशेषताएँ इस प्रकार हैं:-

➢ उत्तर भारतीय मंदिर स्थापत्य / वास्तुकला के इतिहास में राजस्थान का विशिष्ट महत्त्व है। इनकी प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं, जो इन्हें विशेष बनाती हैं।

➢ अलंकृत प्रवेश द्वार या बोर तोरण द्वार, जिस पर विभिन्न देवी-देवताओं तथा प्रतीकों की उत्कीर्ण किया जाता है।

➢ तोरण द्वार के बाद 'उप-मंडप' होता है, जो विशाल आँगन में खुलता है, जिसे 'सभा-मंडप कहा जाता है।

➢ 'सभा -मंडप' के आगे मूल-मंदिर का प्रवेश द्वार होता है तथा इसी मूल-मंदिर के केन्द्रीय भाग को 'गर्भगृह' कहा जाता है, जिसमें मुख्य देवता की प्रतिमा होती है।

➢ गर्भगृह के ठीक ऊपर ही शिखर होता है, जो अलंकृत तथा कभी-कभी स्वर्ण मंडित भी पाया जाता है।

➢ गर्भगृह के चारों ओर गलियारा होता है, जिसे 'पद-प्रदक्षिणा पथ कहते है, जिसमें श्रद्दालु देवी-देवताओं की परिक्रमा करते हैं।

➢ इन प्रमुख स्थापत्य विशेषताओं के साथ ही राजस्थान के मंदिर में विशाल बुर्ज, बड़े- दरवाजे, चारों ओर ऊँची दीवारों का निर्माण किया जाता है, जो राजपूतानों के शौर्य एवं बलिदान की भावना का ही परिलक्षण है।

❖ **राजस्थान के प्रमुख मंदिर**

मौर्यकालीन मंदिर (300 ई.पू.)	• नगरी (चित्तौड़गढ़) नांद (पुष्कर, अजमेर) बैराठ (जयपुर)
गुप्त कालीन मंदिर (300 से 700 ई.)	• चार चौमा शिवालय (कोटा), कन्सुआ (कोटा) • मनोरथ स्वामी मंदिर (चित्तौड़)
	• मुकन्दर का शिव मंदिर, शीतलेश्वर महादेव मंदिर (झालरापाटन)
गुर्जर प्रतिहार या महामारू शैली (700 ई. से 1000 ई.)	• ओसिया के मंदिर (जोधपुर) जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर) , कुभ श्याम मंदिर (चितौड़), कालिका माता मंदिर (चितौड़गढ़) किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), दधिमति माता मंदिर (नागौर) हर्षद माता (आभानेरी,दौसा), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), आउवा कामेश्वर मंदिर (पाली)
सोलंकी मंदिर (चालुक्य) / महागुर्जर शैली (11 वीं से 13 शताब्दी)	• दिलवाड़ा के जैन मंदिर (सिरोही) समाद्धिश्वर मंदिर (मोकल मंदिर) सच्चिया माता मंदिर (ओसिया,जोधपुर)

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

❖ **सोमेश्वर मंदिर किराडू (बाड़मेर)**

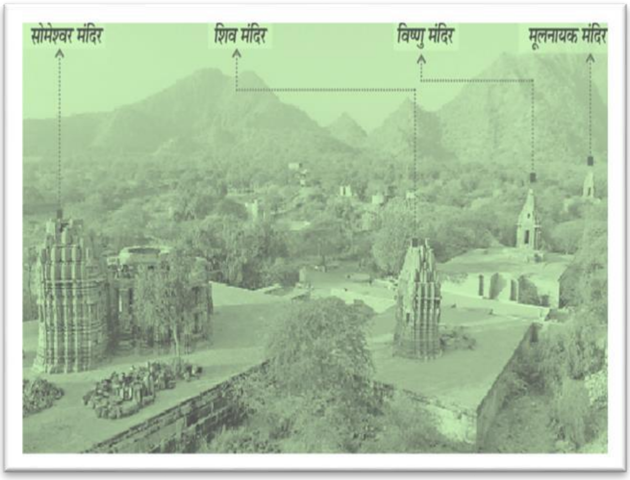

➢ सोमेश्वर मंदिर को रणछोड जी का मंदिर / खेड़िया बाबा / किराडू के मंदिर / भूरिया बाबा का मंदिर भी कहा जाता है।

➢ 11 वीं सदी के सौलंकी वास्तु शैली का एकमात्र मंदिर किराडू (बाड़मेर) में स्थित है।

➢ यह मंदिर हाथमा गाँव, किराडू (बाड़मेर) में स्थित है।

- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- इस मंदिर की मूर्तिकला को देखकर इसे 'मूर्तियों का खजाना' कहा जाता है।
- इन मंदिरों में कुल पाँच मंदिर हैं जिसमें चार भगवान शिव के तथा एक भगवान विष्णु का है।
- इन मंदिरों का मूल निर्माण की शैली नागर या आर्य शैली है।
- किराडू के मंदिरों को राजस्थान का खजुराहो कहते हैं। 1178 ई. में मुहम्मद गौरी ने इस मंदिर पर आक्रमण किया था। इस मंदिर के सामने पहाड़ी पर महिषासुर मर्दिनी की एक त्रिपाद मूर्ति है।

❖ ***शीतलेश्वर महादेव का मंदिर (झालावाड़)***

- यह झालरापाटन, झालावाड़ में स्थित है।
- यह मंदिर महामारू शैली में बना है।
- यह राजस्थान का प्रथम तिथियुक्त (689 ई.) मंदिर है।
- इसका निर्माण दुर्गाण के सामन्त वाप्पक ने करवाया।
- यह मंदिर चन्द्रभागा नदी के किनारे स्थित है
- झालरापाटन 'घंटी वाले मंदिरों का शहर ' कहलाता है।
- इसे चन्द्रमौलिश्वर महादेव मंदिर कहा है।
- यहाँ अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति स्थापति है।

❖ ***ब्रह्मा जी का मंदिर (पुष्कर, अजमेर)***

❖ पुष्कर ब्रह्मा मंदिर का उल्लेख पद्म पुराण में मिलता है।

❖ यह पुष्कर, अजमेर में स्थित विश्व का प्रथम ब्रह्मा मंदिर है।

- इस मंदिर का निर्माण गोकलचंद पारीक ने करवाया था, लेकिन कुछ किंवदंतियों के अनुसार इस मंदिर का प्रारम्भिक निर्माण शंकराचार्य ने करवाया था।
- इस मंदिर को राष्ट्रीय महत्त्व का स्मारक घोषित किया गया है।
- इस मंदिर के परिसर में पंचमुखी महादेव, लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, पातालेश्वर महादेव, नारद और नवग्रह के छोटे - छोटे मंदिर बने हुए हैं।
- NOTE- राजस्थान में स्थित अन्य प्रमुख ब्रह्मा मंदिर छीछ गाँव (बाँसवाड़ा) में तथा आसोतरा बाड़मेर में स्थित हैं।

> ***ब्रह्मा मंदिर (छींछ,बाँसवाड़ा)*** - इस मंदिर का निर्माण ने 12वीं सदी में जगमाल सिसोदिया करवाया। यहाँ नवग्रहों का मंदिर तथा ब्रह्म घाट स्थित है।
>
> ***ब्रह्मा मंदिर (आसोतरा,बाड़मेर)*** - इसका निर्माण संत खेतारामजी महाराज ने करवाया।

❖ ***सावित्री मंदिर (पुष्कर, अजमेर)***

- सावित्री मंदिर का निर्माण रत्नागिरि पर्वत पुष्कर, अजमेर में गोकुलचंद पारीक ने करवाया था।
- सावित्री जी का मेला भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- यहाँ मई, 2016 में राजस्थान का तीसरा रोप वे बनाया गया था।
- कुछ जन अनुश्रुतियों के अनुसार यज्ञ के समय सावित्री माता अपने पति ब्रह्मा से रुठकर यहाँ चली आयी थीं। यहीं सावित्री माता ने ब्रह्माजी को श्राप दिया था कि उनकी पूजा पुष्कर के अतिरिक्त कहीं नहीं होगी।

- इन्हें सैनिकों की देवी, थार की वैष्णो देवी, रुमाल वाली देवी व बी. एस. एफ. के जवानों की देवी कहते हैं।
- वर्तमान में सीमा सुरक्षा बल की 139वीं वाहिनी के जवान माता के पुजारी है।
- वर्ष 1965 के भारत - पाक युद्ध में पाकिस्तानी सेना की ओर से मंदिर के इलाके में करीब 3000 बम गिराए थे, लेकिन मंदिर को कोई नुकसान नहीं हुआ और सभी बम बेअसर हो गए थे।
- इस मंदिर परिसर में लगे शिलालेख के अनुसार जैसलमेर क्षेत्र के निवासी मामडियांजी की पहली संतान के रूप में विक्रम संवत् 808 चैत्र सुदी नवमी मंगलवार को भगवतीश्री आवड़देवी यानी तनोट माता का जन्म हुआ था।
- माता की 6 बहनें आशी, सेसी, गेहली, होल, रूप और लांग थीं। देवी मां ने जन्म के बाद क्षेत्र में बहुत से चमत्कार दिखाए और लोगों का कल्याण किया।
- इस क्षेत्र में राजा भाटी तनुरावजी ने वि.सं. 847 में तनोट गढ़ की नींव रखी थी। इसके बाद यहाँ देवी माँ का मंदिर बनवाया गया और वे तनोट राय माता के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

❖ **सुन्धा माता मंदिर (जसवंतपुरा, जालौर)**

- सुंधा माता मंदिर का निर्माण जालोर के चौहान शासक चाचिगदेव ने विक्रम संवत् 1319 में अक्षय तृतीया को की थी।
- यह मंदिर सुन्धा पर्वत पर स्थित है।
- सुंधामाता को अघटेश्वरी कहा जाता है जिसका अभिप्राय है- वह घट (धड़) रहित देवी, जिसका केवल सिर ही पूजा जाता है।
- इस मंदिर में 20 दिसम्बर, 2006 में राजस्थान का प्रथम रोप-वे स्थापित किया गया।
- सुंधा माता इलाके को प्रदेश का पहला और देश का चौथा भालू अभ्यारण्य बनाया गया।

❖ **कसुआ का शिव मंदिर (कोटा)**

- इस मंदिर में मिले शिलालेख के अनुसार मंदिर का निर्माण 738 ई. में मौर्यवंशी नरेश धवल के सामंत ब्राह्मण राजा शिवगण ने करवाया था।
- यहाँ 1008 मुखी शिवलिंग बने हुए हैं। इस मंदिर में चतुर्मुखी शिवलिंग की पूजा होती है।
- यह दुनिया का एकमात्र मंदिर है जहाँ भगवान शिव के साथ उनका पूरा परिवार विराजमान है।
- यहाँ भगवान शिव के साथ माता पार्वती और उनके दोनों पुत्र भगवान गणेश और कार्तिकेय के साथ पुत्री अशोका सुंदरी भी विराजमान हैं।
- आश्रम में शिवगण, नंदी और भैरव भी विराजमान हैं।
- पौराणिक मान्यताओं और शिलालेखों के अनुसार किसी समय यह महर्षि कण्व का आश्रम था। बताया जाता है कि इसी जगह शकुंतला और उनके बेटे भरत का पालन पोषण हुआ था। भरत के नाम पर देश का नाम भारत रखा गया।

❖ **विभीषण मंदिर (कैंथून, कोटा)**

- यह भारत का एकमात्र विभीषण मंदिर है।
- यह मंदिर लगभग 2000 साल से भी ज्यादा पुराना है। पहले यहाँ प्रतिमा के ऊपर केवल एक छतरी ही थी। वर्ष 1970 से 1881 के बीच कोटा के तत्कालीन महाराजा उम्मेद सिंह प्रथम ने प्रतिमा पर छतरी का निर्माण करवाया था।

- कैथून में विभीषण को धर्म पुरुष के रूप में पूजा जाता है। होली के अवसर पर 7 दिन का मेला लगता है।
- इस मेले की मुख्य विशेषता यह है की होलिका दहन के दूसरे दिन धुलण्डी पर भारत में एकमात्र स्थान जहाँ पर हिरण्यकश्यप के पुतले का दहन किया जाता है।
- मंदिर में स्थापित प्रतिमा का केवल धड़ से ऊपर का भाग ही दिखता है। स्थानीय लोगों की जानकारी के अनुसार यह प्रतिमा हर साल जों के दौंने के बराबर जमीन में धंसती है।
- एक पौराणिक कथा के अनुसार कहा जाता है कि भगवान राम के राज्याभिषेक के समय शिवजी ने मृत्युलोक की सैर करने की इच्छा प्रकट की। जिसके बाद विभीषण ने कांवड़ पर बिठाकर भगवान शंकर और हनुमान को सैर कराने की इच्छा प्रकट की। इस पर शिवजी ने शर्त रख दी कि जहाँ भी उनका कांवड़ जमीन को छुएगा, यात्रा वहीं खत्म हो जाएगी। विभीषण शिवजी और हनुमान को लेकर यात्रा पर निकले। कुछ स्थानों के भ्रमण के बाद विभीषण का पैर कैथून कस्बे में धरती पर पड़ गया और यात्रा खत्म हो गई। कांवड़ का अगला सिरा आगे चौरचौंमा में और दूसरा हिस्सा कोटा के रंगबाड़ी इलाके में पड़ा। ऐसे में रंगबाड़ी में भगवान हनुमान और चौरचौंमा में शिव शंकर का मंदिर स्थापित किया गया और जहां विभीषण का पैर पड़ा, वहां विभीषण मंदिर का निर्माण करवाया गया।

❖ **मधुराधीश मंदिर (पाटनपोल, कोटा)**

- यह वल्लभ सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ है।
- यहाँ स्थित भगवान कृष्ण की मूर्ति को 1670 ई. में बूँदी लाया गया, जहाँ से 1744 ई. में दुर्जनशाल हाड़ा कोटा लेकर आये तथा मंदिर का निर्माण करवाया।
- यहाँ दीपावली पर अन्नकूट , होली पर फागोत्सव तथा जन्माष्टमी पर नन्द महोत्सव किये जाते थे।

❖ **रणकपुर जैन मंदिर(पाली)**

- इस मंदिर का निर्माण सेठ धरणक शाह पोरवाल ने राणा कुम्भा के समय करवाया था।
- इसका निर्माण कार्य 1446 ई. में प्रारंभ हुआ और 1496 ई. में बनकर तैयार हुआ। इसके प्रमुख शिल्पकार देपाक सोमपुरा ब्राह्मण थे। इस मंदिर के निर्माण पर उस समय 99 लाख रुपए का खर्चा हुआ था।
- इस मंदिर में आदिनाथ / ऋषभदेव की 5 फीट ऊँची संगमरमर की मूर्ति लगी है। इस मंदिर के मुख्य द्वार की छत पर ऋषभदेव की माता मारुदेवी की हाथी पर बैठे मूर्ति है।
- इस मंदिर में कुल 24 मण्डप, 84 शिखर, 1444 स्तंभ / खम्भे हैं जिस कारण इसे स्तंभों / खम्भों का अजायबघर कहते है।
- इस मंदिर की आकृति विमान की आकृति के समान होने के कारण नलिनीगुल्मविमान नाम दिया गया तथा मंदिर के 4 द्वार, 4 मंडप व भगवान की 4 प्रतिमाएं स्थित हैं, इसलिए चौमुखा जिनालय भी कहते हैं।
- इस मंदिर के प्रवेश द्वार पर लगे शिलालेख में इसे श्री चतुर्मुख युगादीश्वर विहार तथा त्रैलोक्य दीपक कहते हैं। इस मंदिर में दो विशाल घंटे लगे हुए है जिनके घटनांद से नर व मादा का भेद ज्ञात होता है।
- फर्ग्युसन का कथन - "मैं अन्य ऐसा कोई भवन नहीं जानता जो इतना रोचक व प्रभावशाली हो या जो स्तम्भों की व्यवस्था में इतनी सुन्दरता व्यक्त करता है।"
- इस मंदिर के पास ही नेमिनाथ जैन मंदिर स्थित है।

➢ किले एवं महल

- राजा - महाराजाओं के रहने व उनका खजाना सुरक्षित रखने के लिए दुर्ग / गढ़ / किला का निर्माण किया जाता था जिसमें अनेक महीनों का राशन व पानी का भण्डारण होता था।
- दुर्ग में महल, शस्त्रागार, राजकीय आवास, सैनिक छावनियाँ , तालाब , कुण्ड छतरियाँ आदि होते थे।
- भारत में सर्वप्रथम दुर्ग के अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता से मिले हैं जिसमें नगर के दो भाग थे-

(i) दुर्गीकृत (ii) अदुर्गीकृत दुर्ग

- भारत में सर्वाधिक दुर्ग महाराष्ट्र में जबकि राजस्थान का दुर्गों में तीसरा स्थान है।
- राजस्थान में सर्वाधिक दुर्ग जयपुर जिले में हैं ।
- दुर्गों का सर्वप्रथम वर्गीकरण मनुस्मृति में हुआ है। मनुस्मृति में छः प्रकार के दुर्ग बताये गये हैं इनमें गिरि दुर्ग सर्वश्रेष्ठ है।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य के सप्तांग सिद्धांत में सबसे महत्वपूर्ण दुर्ग को बताया है।
- **शुक्र नीति के अनुसार ९ प्रकार के दुर्ग बताए गए जो निम्न हैं-**
- शुक्रनीति में सैन्य दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

(1.) एरन दुर्ग

- यह दुर्ग खाई, काँटों तथा कठोर पत्थरों से - निर्मित होता है।
- उदाहरण- रणथम्भौर दुर्ग, चित्तौड़ दुर्ग

(2.) धान्वन (मरूस्थल) दुर्ग

- ये दुर्ग चारों ओर रेत के ऊँचे टीलों से घिरे होते हैं।
- उदाहरण- जैसलमेर , बीकानेर व नागौर के दुर्ग ।

(3.)औदक दुर्ग (जलदुर्ग)

- ये दुर्ग चारों ओर पानी से घिरे होते है।
- उदाहरण- गागरोण का दुर्ग, भैंसरोड़गढ़ दुर्ग।

(4.) गिरि दुर्ग

- ये पर्वत एकांत में किसी पहाड़ी पर स्थित होता है तथा इसमे जल संचय का अच्छा प्रबंध होता है।
- उदाहरण- कुम्भलगढ़ , तारागढ़, जयगढ़, नाहरगढ़ (जयपुर), मेहरानगढ़ (जोधपुर)

(5.) सैन्य दुर्ग

- जो व्यूह रचना में चतुर वीरों से व्याप्त होने से अभेद्य हो।
- ये दुर्ग सर्वश्रेष्ठ समझे जाते है।

(6.) सहाय दुर्ग

- जिसमें वीर और सदा साथ देने वाले बंधुजन रहते हो।

(7.)वन दुर्ग

- जो चारों ओर वनों से ढका हुआ हो और कांटेदार वृक्ष हो।
- उदाहरण- सिवाना दुर्ग , त्रिभुवनगढ़ दुर्ग , रणथम्भौर दुर्ग।

(8.) पारिख दुर्ग

- वे दुर्ग जिनके चारों ओर बहुत बड़ी खाई हो।
- उदाहरण-लोहागढ़ दुर्ग , भरतपुर।

(9.) पारिध दुर्ग

- जिसके चारों ओर पत्थर तथा मिट्टी से बनी बड़ी - बड़ी दीवारों का सुदृढ़ परकोटा हो।
- उदाहरण-चित्तौड़गढ़ , कुम्भलगढ़ दुर्ग।

- ❖ राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक विदेशी आक्रमण हुए -भटनेर (हनुमानगढ़)
- ❖ राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक स्थानीय आक्रमण हुए-तारागढ़ (अजमेर)
- ❖ राजस्थान का सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट- चित्तौड़ दुर्ग
- ❖ राजस्थान में सर्वाधिक बुर्जों वाला दुर्ग –सोनारगढ़ (जैसलमेर, कुल ९९ बुर्ज)
- ❖ राजस्थान में अंग्रेजों द्वारा निर्मित दुर्ग -बोरासवाड़ा / टॉडगढ़ (अजमेर)
- ❖ राजस्थान का सबसे पुराना दुर्ग - भटनेर (हनुमानगढ़)
- ❖ राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग -मोहनगढ़ (जैसलमेर)
- ❖ वर्ष 2013 में यूनस्को की विश्व धरोहर सूची में राजस्थान के 6 दुर्ग शामिल किये - 1. चित्तौड़ 2. कुम्भलगढ़ (राजसमंद) 3. गागरोन (झालावाड़) 4. जैसलमेर 5. रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर) 6. आमेर

❖ **चित्तौड़गढ़ का किला**

- **उपनाम-** चित्रकूट, राजस्थान का गौरव, दक्षिणी - पूर्वी द्वार, दुर्गों का दुर्ग, दुर्गों का सिरमौर, दुर्गों का तीर्थस्थल,
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग को चित्रकूट दुर्ग, खिज्राबाद, सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट, वॉटर फोर्ट आदि नामों से जाना जाता है।
- यह राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट 'गिरी दुर्ग 'है।
- इसका निर्माण 8 वीं शताब्दी में 620m. ऊँचे मेसा के पठार पर गंभीरी एवं बेड़च नदी के मुहाने पर करवाया था ।
- 2013 में UNESCO ने इसे विश्वधरोहर घोषित किया, तथा दिसम्बर 2018 में इस दुर्ग पर 12 रु. का डाक टिकट जारी किया गया था ।
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- राणा कुम्भा को इस दुर्ग का आधुनिक निर्माता माना जाता है।
- यह दुर्ग दिल्ली मालवा व गुजरात के रास्ते पर स्थित है जिसका सामरिक महत्त्व सर्वाधिक है।
- 734 ई. में बप्पा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा है " गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढ़ैया। "
- इस दुर्ग को राजस्थान का दक्षिणी प्रवेश द्वार व मालवा का प्रदेश द्वारा कहते हैं।
- यह दुर्ग धान्वन दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी में शामिल है।
- यह एकमात्र दुर्ग है जिसमें कृषि होती थी।
- यह दुर्ग गम्भीरी व बेड़च नदी के संगम पर स्थित राजस्थान का क्षेत्रफल में सबसे बड़ा दुर्ग है।
- यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- यह दुर्ग मेसा पठार पर स्थित है जिसकी आकृत्ति व्हेल मछली के समान है।
- इस दुर्ग में प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण एकादशी को जौहर मेले का आयोजन किया जाता है।
- इस दुर्ग में स्थित प्रमुख जल स्रोतों में घी - तेल बावड़ी,कातण बावड़ी, जयमल - फत्ता तालाब, गौमुख कुण्ड, हाथीकुण्ड, सूर्यकुण्ड, भीमतल कुण्ड,रामकुंड व चित्रांगद मौरी तालाब प्रमुख है।
- **इस दुर्ग में राजस्थान में सर्वाधिक 3 साके हुए जो निम्न है-**

  प्रथम साका वर्ष 1303 ई. में हुआ जब रत्नसिंह व अलाउद्दीन के मध्य युद्ध हुआ जिसमें रत्नसिंह ने केसरिया तथा उसकी रानी ने पद्मिनी ने जौहर किया।

  द्वितीय साका वर्ष 1534-35 ई. में हुआ जब विक्रमादित्य के सेनापति बाघसिंह रावत व गुजरात के शासक बहादुरशाह के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति बाघसिंह रावत के नेतृत्व में केसरिया तथा राणा सांगा की रानी कर्मावती के नेतृत्व में जौहर हुआ।

  तृतीय साका वर्ष1567-68 ई. में हुआ जब दिल्ली के बादशाह अकबर व राणा उदयसिंह के सेनापति जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति जयमल – फत्ता के नेतृत्व में केसरिया तथा गुलाब कंवर व फूल कंवर के नेतृत्व में जौहर हुआ।

- **इस दुर्ग में सात प्रवेश द्वार हैं-**

1. पाडन पोळ / पावटन पोळ - यहाँ देवलिया के रावत बाघसिंह की छत्री है।
2. भैरों पोळ - यहाँ कल्ला राठौड़ की 4 खम्भों तथा, जयमल राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी है।
3. हनुमान पोळ
4. लक्ष्मण पोळ
5. जोड़न पोळ
6. गणेश पोळ
7. रामपोळ - यहाँ फत्ता सिसोदिया का स्मारक बना हुआ है।

3. कालबेलियां

✓ ये नाथों से नीचे होते हैं। इनकी प्रमुख गद्दी जोधपुर के ढिकाई गांव में कनीपाव की गद्दी हैं।

❖ **राजस्थान के प्रमुख निर्गुण भक्ति धारा के सम्प्रदाय**

➢ **संत जसनाथ जी (जसनाथी सम्प्रदाय)**

- इनके बचपन का नाम जसवंत सिंह था ।
- इनका जन्म विक्रम संवत 1539 में बीकानेर के कतरियासर ग्राम में हमीर जी जाट व माता रुपांदे के यहाँ हुआ ।
- इन्होंने गोरख आश्रम में गोरख नाथ से शिक्षा ग्रहण की, जहाँ आश्विन शुक्ल सप्तमी विक्रम संवत 1551 को ज्ञान प्राप्त हुआ ।
- इनके उपदेश सिंभुदड़ा तथा कोंड़ा ग्रन्थों में उल्लेखित हैं ।
- इस सम्प्रदाय के लोग जाल वृक्ष तथा मोर पंख को पवित्र मानते हैं ।
- 24 वर्ष की अवस्था में आश्विन शुक्ल सप्तमी विक्रम संवत 1563 को ब्रह्मलीन हो गये । इन्होंने जीवित समाधि ली थी ।
- इनके प्रमुख शिष्य होरोजी, हंसोजी, रुस्तमजी थे ।
- इन्होनें योग पर बल दिया था ।
- सिकन्दर लोधी इनसे प्रभावित थे, जिन्होंने कतियासर में इनको जमीन प्रदान की थी ।
- जसनाथ जी के अनुयायी जो इस संसार से विरक्त हो गये हैं, उन्हें परमहंस कहा जाता हैं ।
- इन्होने अपने अनुयायीयों को 36 नियमों का पालन करने की आज्ञा दी हैं ।
- जाट इनके अधिक अनुयायी थे । जो गले में काली ऊन का धागा बांधते हैं ।
- जमीन में समाधि लेना, रात्री जागरण, अग्नि पर नृत्य करना आदि कार्य करते हैं ।
- कतरियासर में आश्विन शुक्ल सप्तमी को मेला लगता हैं ।
- इस सम्प्रदाय की पांच प्रमुख पीठे निम्न प्रकार हैं –

1. बमलू – बीकानेर 2. लिखमादेसर-बीकानेर 3. पूनरासर – बीकानेर 4. मालासर – बीकानेर 5. पांचला – नागौर

❖ **संत जांम्भो जी (विश्नोई सम्प्रदाय)**

- इनका जन्म नागौर के पीपासर ग्राम में भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को हुआ था ।
- पिता का नाम - लोहट तथा माता का नाम - हंसा देवी, ये पंवार वंशीय राजपूत थे ।
- इनका मूल नाम धनराज था ।
- इन्हें पर्यावरण वैज्ञानिक, गहला व गूंगा के नाम से भी जाना जाता था ।
- जांम्भोजी ने जम्भ संहिता, जम्भ सागर, शब्दवाणी, विश्नोई धर्म प्रकाश नामक ग्रंथ लिखे ।
- जांम्भोजी के उपदेश स्थल को साथरी कहा गया ।
- इन्होंने आत्मा को अमर तथा ईश्वर के समान सर्वव्यापक माना हैं एवं मोक्ष के लिए गुरु होना अनिवार्य माना हैं ।
- विश्नोई पंथ की दीक्षा लेने वाले को गुरु मंत्र पिलाया जाता हैं, जिसे महल कहा जाता हैं ।
- जाम्भोजी ने इस संसार को गोवलवास (अस्थायी निवास) बताया हैं ।
- माता पिता की मृत्यु के बाद बीकानेर के सभास्थल (समरास्थल) चले गये वहाँ हरि सत्संग करते थे ।
- यहाँ धोकधोरा नामक स्थान पर कार्तिक कृष्ण अष्टमी सन् 1485 ई. को विश्नोई सम्प्रदाय की स्थापना की ।
- जीव हत्या, वृक्ष काटना, छुआछूत- ऊंच-नीच के निवारा के लिए लोगों को 29 नियमों के पालन करने की सलाह दी ।
- ये नियम इन्होंने हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म से लिए थे ।
- इन नियमों का पालन करने वालें विश्नोई कहलायें। विश्नोई सम्प्रदाय इनका पालन करते थे ।
- माघ कृष्ण नवमी को तालवा - मुकाम नामक स्थान पर शरीर छोड़ दिया ।

- गुरू जम्भोजी के सम्मान में बीकानेर के नरेश ने अपने झण्डे में खेजड़े के वृक्ष को 'माटो' के रूप में रखा था ।
- जम्भसागर (जम्भोवाणी) **जांम्भोजी** का प्रमुख ग्रंथ हैं । इन्होंने विष्णु की भक्ति पर बल दिया व खुद को विष्णु कहा ।

- **जाम्भोजी के आठ धाम –**

1. पीपासर (नागौर) - जन्म स्थल
2. मुकाम (बीकानेर) – बीकानेर जिले की नोखा तहसील में मुकाम नामक स्थान पर समाधि स्थल है, जहां आश्विन व फाल्गुन अमावस्या को मेला भरता हैं ।
3. लालसर (बीकानेर) - निर्वाण प्राप्त हुआ
4. जाम्भा (जोधपुर) - विश्नोई समाज का पुष्कर कहलाता हैं, यहां जैसलमेर के जैतसिंह ने तालाब का निर्माण करवाया, जहां चैत्र अमावस्या तथा भाद्रपद पूर्णिमा को मेला भरता हैं ।
5. जांगलू (बीकानेर) - भाद्रपद अमावस्या को व चैत्र अमावस्या को मेला भरता हैं ।
6. रामड़ावास (जोधपुर) - जाम्भोजी ने उपदेश दिये थे ।
7. लोदीपुर, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) - अपने भ्रमण के दौरान आये ।
8. रोटू (नागौर) - आराध्य स्थल हैं ।

- विश्नोई खेजड़ी की सरक्षार्थ अपने बलिदान के लिए जाने जाते हैं । करमा और गौरा ने जोधपुर के रैवासड़ी गांव में बलिदान दिया तथा अभय सिंह के शासन काल में अमृता देवी ने बलिदान दिया।

❖ **रामस्नेही सम्प्रदाय**

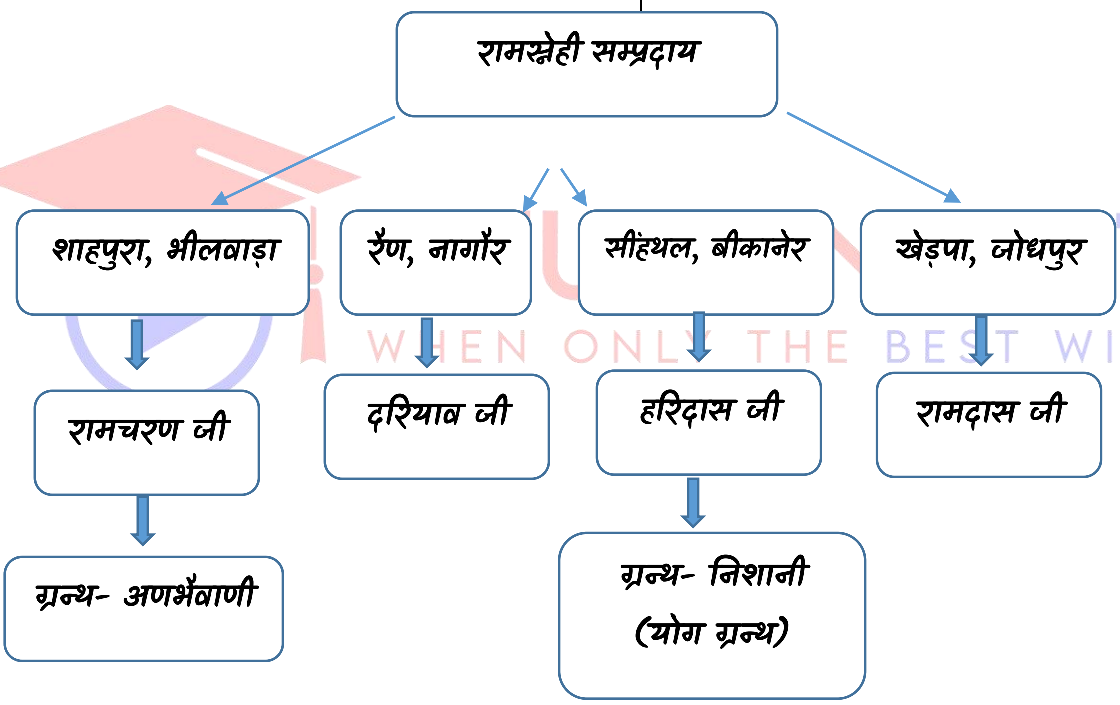

- इसके प्रवर्तक रामचरण दास जी थे ।
- इनके बचपन का नाम रामकिशन था ।
- जिसे इनके गुरू कृपाराम ने रामचरण कर दिया ।
- रामचरण जी का जन्म टोंक जिले के सोड़ा ग्राम में विजयवर्गीय परिवार में 1720ई. को हुआ था ।
- इनके पिता का नाम बखतराम, माता का नाम देऊजी था ।

- इनका स्वर्गवास 1798 शाहपुरा (भीलवाड़ा) में हुआ था ।
- यहाँ पर रामस्नेही सम्प्रदाय की मुख्य पीठ हैं ।
- इनके पूजा स्थल रामद्वारा कहलाते हैं ।
- इनका मुख्य ग्रंथ अर्णभवाणी हैं ।
- इस मत में मूर्ति पूजा नहीं करते व गुलाबी वस्त्र पहनते हैं ।
- फूलडोल मेला शाहपुरा (भीलवाड़ा)होली के पश्चात दूसरे दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र कृष्ण पंचमी तक लगता हैं ।
- तीन अन्य स्थानों पर पीठ है।

- **सिंहथल**

✓ बीकानेर, प्रवर्तमक - हरिदास जी थे ।
✓ इनके गुरु जयमल दास थे ।
✓ इन्होंने निशानी नामक ग्रंथ लिखा, जिसमें प्राणायाम व योग साधना का वर्णन किया गया हैं।

- **रैंण, मेड़ता**

✓ प्रर्वतक – दरियाव जी ।
✓ इनके गुरु प्रेमनाथ थे ।
✓ इनका जन्म पाली जिले के जैतारण ग्राम में हुआ।
✓ इन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता पर जोर दिया तथा राम शब्द के दो अर्थ बताये - रा-राम, म-मोहम्मद।

- **खेड़ापा**

✓ जोधपुर, प्रवर्तक रामदास जी ।
✓ इनके गुरु हरि रामदास जी थे ।
✓ इन्होंने मूल सम्प्रदाय के आदर्शों को ही आगे बढ़ाया।

❖ **दादू सम्प्रदाय**

- इसके प्रवर्तक दादू दयाल जी थे ।
- इन्हें राजस्थान का कबीर कहा जाता हैं ।
- इनका अभिवादन सत्यराम होता हैं ।
- दादू जी का जन्म सन् 1544 ई. में गुजरात के अहमदाबाद नगर में हुआ था ।
- दादूजी की रचनाएँ दादूदयाल री वाणी ढूंढाडी भाषा हैं ।
- सन्त बुद्धाराम/ बुड्ढन जी / वृन्द्धानंद जी (ये संत कबीर के शिष्य थे) से दीक्षा ग्रहण की और 19 वर्ष की आयु में राजस्थान आये ।
- इन्होनें अपना प्रथम उपदेश 1568 में सांभर में दिया तथा यही पर बह्म की उपासना पर जोर देते थे।
- दादू पंथी साधु विवाह नहीं करते थे ।
- सन् 1602 में नरैना (फुलेरा) आ गये और वही ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी 1605 ई. में महाप्रयाण किया।
- 1585 ई. में फतेहपुर सीकरी की यात्रा के दौरान उन्होंने अकबर से भेंट की तथा उसे अपने विचारों से प्रभावित किया ।
- इन्होनें बाहय आडम्बरों को दूर करने के लिए **निपख नामक** आंदोलन चलाया ।
- नरायणा (नरैणा) जयपुर में इनका अन्तिम समय व्यतित हुआ, जहां इनकी प्रधा गद्दी हैं ।
- दादू पंथ के सत्संग स्थल "अलख दरीबा" कहलाते हैं ।
- कविता रूप में व्यक्त विचारों को दादू वाणी तथा दादू दयाल जी रा दूहा कहा जाता हैं ।
- मूर्ति पूजा का घोर विरोध किया तथा हिन्दू मुसलमान एकता पर ध्यान दिया था ।
- निर्गुण ब्रह्म की उपासना व शव को जंगलों में खुला छोड़ना, मोक्ष में विश्वास नही रखते थे ।
- दादू जी का मेला नरायणा में फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को भरता हैं ।

- **दादू की पाँच प्रमुख शाखाऐं हो गई –**

1. खालसा (गरीबदास जी से संबंधित)
2. विरक्त (इसे निहंग भी कहा जाता है, जो चलते फिरते हुये गृहस्थियों को आदेश देते है)
3. उतरादे (ये राजस्थान छोड़कर उत्तर भारत चले गये)
4. खाकी (ये शरीर पर भस्म रमा कर रहते हैं)
5. नागा (ये नंगे रहते है, इसकी स्थापना सुंदरदास जी ने की थी)

- **अलख दरीबा** - दादू पंथ के सत्संग स्थलों को कहा जाता हैं ।
- **हरडेबानी** - दादू जी के शिष्य रज्जब जी द्वारा लिखित ग्रंथ ।

बाद 2011 में भारत सरकार ने नागरिक सम्मान में इन्हें पद्मश्री का पुरस्कार से नवाजा गया । कृष्णा पूनिया का जन्म 05 मई 1977 में हरियाणा के एक जाट परिवार में हुआ। पूनिया की शादी 2000 में राजस्थान के चुरु जिले के गागर्वास गांव के रहने वाले वीरेन्द्र सिंह पूनिया से हुई।

महान व्यक्तियों के उपनाम

- राजस्थान के गाँधी - गोकुल भाई भट्ट
- बांगड़ के गाँधी - भोगीलाल पण्ड्या
- गांधीजी के पांचवें पुत्र - जमनालाल बजाज
- राजस्थान की मरु कोकिला - गवरी बाई
- राजस्थान की राधा - मीराबाई
- राजपूताने का अबुल फजल - मुहणौत नैणसी
- मारवाड़ का प्रताप - महाराजा चन्द्रसेन
- हल्दीघाटी का शेर - महाराणा प्रताप
- लोक कलाओं के कमल पुष्प - देवीलाल सामर
- राजस्थान केसरी - केसरी सिंह बारहट
- भारतीय इतिहास साहित्य के पुरोधा - गौरी शंकर ओझा
- राजस्थान की मांड मल्लिका - श्रीमती गंवरी देवी
- सेवा, चिंतन तथा राजनीती के त्रिवेणी - श्री हरिभाऊ उपाध्याय
- राजस्थान के सहृदय - डॉ. प्रभुनारायण शर्मा
- राजस्थान के अर्जुन - लिम्बाराम
- पोलो विश्व विजेता - कर्नल किशन सिंह
- राजस्थान के लोकनायक - जयनारायण व्यास
- 'दा साहब ' - श्री हरिभाऊ उपाध्याय
- धुन के धनी - जय नारायण व्यास
- 'लक्कड़ और कक्कड़ ' - जय नारायण व्यास
- अक्कड़ और पियक्कड़ - कवि सूर्यमल मिश्रण
- शेखावटी का शेर-ए-दिल - ओलम्पिक राधेश्याम
- राजस्थान के बॉलीबाल टाइगर - सुरेश मिश्रा
- कलियुग का कर्ण - राव लूणकरण (बीकानेर शासक)
- राजपूताने का कर्ण - रायसिंह
- राजस्थान के संगीत सम्राट - आलड़िया खान
- राजस्थान के चितरंजनदास - मुकट बिहारी लाल भार्गव (हरिभाऊ उपाध्याय ने कहा)
- आदिवासियों के मसीहा - मोतीलाल तेजावत ।
- बांगड़ की मीरा (मीरा का अवतार) - गंवरी बाई
- शेर-ए-भरतपुर - गोकुल वर्मा
- भारत की मोनालिसा - बणी-ठणी
- राजस्थान इतिहास लेखन के पितामह - जेम्स कर्नल टॉड
- राजस्थान का कबीर - दादूदयाल
- डिंगल भाषा का हैरोस - पृथ्वीराज राठौड़
- राजस्थान का नृसिंह - संत दुर्लभजी
- राजस्थान का लोह पुरुष - दामोदर व्यास (टोंक)
- "दादीजी" - राणी सती (झुंझुनू)
- "बावजी" - मोतीलाल तेजावत (भील नेता)
- जंगलधर बादशाह - लूणकरण (बीकानेर). कर्ण सिंह (बीकानेर)
- "रानीजी" - लेखिका लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत
- सुल्तान तारेकिन (सन्यासियों के सुल्तान) - हमीदुद्दीन नागौरी
- कलियुग की वाल्मीकि - हरिदास निरंजनी (निरंजनी सम्प्रदाय, नागौर)
- "कवि बांधव" - बीसलदेव (बिग्रहराज चतुर्थ)
- हिन्दूपत (हिंदुआ सूरज) – महाराणा सांगा
- बांगड़ के धनी - नरहड़ के पीर
- आधुनिक जयपुर के निर्माता - मिर्जा इस्माइल (मानसिंह द्वितीय के प्रधानमंत्री)
- राजस्थान का नेहरू - पंडित जुगल किशोर चतुर्वेदी (भरतपुर)
- मीलो का चितेरा - गोवर्धन लाल बाबा (राजसमंद)
- शेर-ए-राजस्थान - लोकनायक जय नारायण व्यास
- भैंसों का चितेरा - परमानंद चोयल
- आधुनिक राजस्थान के निर्माता - भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया
- मूडस या मनः स्थितियों के चित्रकार - विद्यासागर उपाध्याय
- खड़ताल के जादूगर - सद्दीक खान (बाड़मेर)
- "वीर रसावतार " - सूर्यमल मिश्रण
- "गीगला का बापू" - गणपत लाल डांगी
- अपंग के जादूगर - जहूर खान मेवाती (अलवर)
- जादू के विश्व सम्राट - सम्राट शंकर जादूगर (गंगानगर)
- नगाड़े का जादूगर - रामकिशन (पुष्कर, अजमेर)
- जैन चित्रकला के जादूगर - कैलाश चंद्र शर्मा।
- अलवर का रसखान - अलीबख्श (अतरौली घराने के संगीतज्ञ)
- "रुलाने वाले फकीर " - मानतौल खान
- प्रयोग धर्मी चित्रकार - सुधीर वर्मा

- पखावज के जादूगर - पंडित परुषोतम दास (नाथद्वारा, राजसमंद)
- तनावपूर्ण चित्रों के जादूगर - अब्दुल करीम (शाहपुरा, भीलवाड़ा)
- नारायण सिंह बैंगनीया (धौलपुर), देश का सबसे छोटे कद का कलाकार।
- राजस्थान जुबान की मशाल - डॉ. सीताराम लालस (एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका द्वारा कहा गया था)
- जाटों का प्लेटो (अफलातून) - राजा सूरजमल (भरतपुर)
- मारवाड़ राज्य का कानून निर्माता - मुंशी देवी प्रसाद
- माच ख्याल के पितामह - बगसुलाल खमेसरा (भीलवाड़ा)
- चिड़ावा (झुंझुनू) के गाँधी - मास्टर प्यारेलाल गुप्ता
- राजस्थान का भारतेन्दु - शिवचंद्र भरतिया
- घोड़े वाले बाबा - कर्नल जेम्स टॉड
- माउन्ट एवरेस्ट ऑफ़ म्यूजिक - संगीत सम्राट अल्लदिया खान (मी. जयकर ने कहा)
- राजस्थान की लता मंगेशकर - सीमा मिश्रा
- राजस्थान की हेमा मालिनी - नीलू
- राजस्थान की जलपरी - रीमा दत्ता (अजमेर)
- शेखावटी के गाँधी - बद्रीनारायण सोढाणी (सीकर)

अभ्यास प्रश्न

I. आरएएस मुख्य परिक्षा गत वर्ष प्रश्न

Q1. डॉ. एल. पी. टेस्सीटोरी की विवेचना कीजिए। [2012]

Q2. भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिंदी साहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियों के अग्रदूत थे विवेचना कीजिए। [2018]

Q3. उद्योतन सूरि की विवेचना कीजिए। [2012]

Q4. अल्लाह जिलाई बाई की संक्षिप्त में विवेचना कीजिए। [2012]

Q5. मुहणौत नैणसी का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Q6. स्वतंत्रता संग्राम में शाहपुरा के बारहठ परिवार का योगदान बताइए।

Q7. आदिवासियों के उत्थान में मोतीलाल तेजावत की भूमिका बताइए।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/9qwi7z

Online order - https://bit.ly/41wfqPD

Call करें - 9887809083